प्रथम अध्याय

महिला आत्मकथाओं का अर्थ एवं स्वरूप ।

1.1 आत्मकथा का अर्थ एवं स्वरूप ।

1.2 आत्मकथा की अवधारणा ।

1.3 आत्मकथा की उपादेयता एवं प्रासंगिकता ।

1.4 महिला लेखिकाओं की आत्मकथाओं का उद्भव एवं विकास ।

1.5 बहुचर्चित महिला आत्मकथा: विहंगम दृष्टि ।

निष्कर्ष

प्रथम अध्याय

महिला लेखिकाओं की आत्मकथाओं का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन

1.1 आत्मकथा का अर्थ एवं स्वरूप-

आत्मकथा का अर्थ होता है - स्वयं द्वारा स्वयं के जीवन पर लिखी कथा। यह शब्द दो शब्दो के संयोग से बना है - 'आत्म' और 'कथा'। इन दोनों के काफी अर्थ है - आत्म का अर्थ - अपना, स्वयं, निजी, आत्मा, मन, आपबीती, अनुभव आदि। कथा का अर्थ - गाथा, कहानी, जीवन का अनुभव, जीवन की कहानी आदि। इस प्रकार दोनों शब्दों के अर्थ जानने के बाद आत्मकथा का अर्थ - अपनी कहानी, स्वयं की कहानी, स्वयं के जीवन व अनुभव की कहानी। हिन्दी साहित्य में आत्मकथा गद्य की नवीन विधाओं में सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। यह विधा हिन्दी में अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से उत्पन्न व विकसित हुई मानी जाती है। 'आत्मकथा' शब्द को अंग्रेजी भाषा के 'ऑटोबायोग्राफी' शब्द के पर्यायवाची या समानार्थी माना जाता है। डॉ. कमलेश सिंह के अनुसार - ''बायोग्राफी शब्द की उत्पति ग्रीक शबद 'बायोस' अर्थात् लाइफ (जीवन) और ग्राफियर अर्थात् 'टू राइट' (लिखना) के मेल से हुई है[1]।'' इस प्रकार आत्मकथा शब्द के अर्थ की उत्पति के आधार पर आत्मकथा

[1] डॉ० कमलेश सिंह, हिन्दी आत्मकथा स्वरूप एवं साहित्य, पृ0 2

का अर्थ 'जीवन के विषय में लिखना है।' आत्मकथा स्वयं द्वारा स्वयं के जीवन व अनुभवों के संबंध में लेख होता है। अगर साहित्य के विषय में आत्मकथा का अर्थ देखा जाए तो जब व्यक्ति स्वयं साहित्यिक ढ़गं और कलात्मक रूप से अपने बीते हुए जीवन की घटनाओं को लिखता है तो उसे आत्मकथा कहते है। आत्मकथा शब्द लैंगिक आधार पर स्त्रीलिंग है। आत्मकथा शब्द में पहला शब्द 'आत्म' एक विशेष है और कथा के दो अर्थ मुख्य रूप से दिखाई पड़ते हैं - प्रथम - आत्मकथा, द्वितीय - परकथा। इनके विषय में डॉ. बापूराव देसाई ने कहा है कि ''आत्मकथा में अपने जीवन की कहानी और आत्मचरित होता है जिसे लेखक स्वयं लिखता है जबकि परकथा (जीवनी) किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लिखी जाती है[2]।'' हिन्दी साहित्य दृष्टि से देखा जाए तो आत्मकथा बहुत ही जटिल, गौण, परन्तु एक अर्थपूर्ण विधा है इसके माध्यम से मनुष्य अपना आत्मीय चरित्र सार्वजनिक करता है। 1796 ई. में पहली बार 'आत्मकथा' नामक शब्द का प्रयोग जर्मनी के रहने वाले 'हर्डर' नामक व्यक्ति ने किया। आरम्भिक समय में आत्मकथा और जीवनी को पर्यायवाची माना जाता था। इसलिए इसे 'आत्मजीवनी' कहा जाता है। 19वीं शब्तादी के आरम्भिक दशकों से ही आत्मकथा को जीवनी से अलग करके स्वतंत्र विधा के रूप में जाना जाने लगा। जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति आत्मकथा होती है। आत्मकथा एक ऐसा दस्तावेज है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने जीवन

[2] डॉ० बापूराव देसाई, हिन्दी आत्मकथा विधा का शास्त्र और इतिहास, पृ0 24-25

की घटनाओं और अनुभवों को आत्मविश्लेषण करके लिपिबद्ध करता है। आत्मकथा लिखने का उद्देश्य अतीत में स्वयं के साथ घटने वाली घटनाओं की स्मृतियों का विवरण सत्य व यथार्थ की दृष्टि से आत्मनिरीक्षण होता है। साहित्य व आत्मकथा के अन्तःसम्बन्धों को भी हमें इसकी पारिभाषिक विवेचना से पहले जानना आवश्यक है। जीवन ही साहित्य का आधार है। दोनों एक-दूसरे के पूरक होते है। साहित्य वह संबंध सार्वजनिक जीवन, राजनैतिक जीवन, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन से भी होता है। जिस प्रकार साहित्य का सम्बन्ध व्यक्तिगत जीवन से होता है उसी प्रकार व्यक्तिगत जीवन में भी साहित्य के तत्त्व विद्यमान होते हैं। इसके परिणाम स्वरूप आत्मकथा ने साहित्य में अपना स्थान लोकप्रिय विधाओं में दर्ज करवा लिया है। इसके विषय में पाश्चात्य विद्वान विलियम हेनरी ने कहा है कि ''साहित्य के सूत्र हमें जीवन मे मिलते है और वैयक्तिक जीवन में लौकिक रूचि के गूढ़ तत्त्व निहित हैं[3]।'' आत्मकथा पाठक के लिए एक ऐसा झरोखा होता है जिसके माध्यम से वह लेखक के निजी जीवन, व्यक्तिगत संबंध, मूल्य एवं विचारधारा, उन्नति एवं अवनति के बारे में और अधिक जानने की उत्सुकता को जन्म देता है। आत्मकथा के लेखक के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर पाठक अपने जीवन को एक नई दिशा और दशा दे सकता है। क्योंकि व्यक्ति स्वयं की गलतियों से सौ जन्म में भी नहीं सीख सकता। विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद को माना जाता है। वेद, उपनिषद ब्राह्मण ग्रंथ

3

आदि प्रमुख रूप से प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल की देन है। आत्म की व्युत्पति वैदिक युग से ही हुई है। वैदिक युग में ही हमें आत्मकथा का आभास होने लगता है। हमारे ऋषि, मुनियों को उसी युग में आत्मकथा का ज्ञान था किन्तु उस समय वह न तो एक स्वतंत्र विधा थी और न ही ऋषि मुनि अपने बारे कुछ लिखना ठीक समझते थे। वे अपना नाम ऋचाओं और मंत्रों में ले देते । वैदिक युग के बाद इस विधा का थोड़ा और विकसित रूप हमें पालि साहित्य में भिक्षु-भिक्षुणी (थेर-थेरी) की कथाओं में मिलता है। इसके पश्चात् हमें अपभ्रंश साहित्य में भी आत्मकथा के और अधिक विकसित रूप सामने आते हैं। हिन्दी साहित्य में मध्यकाल में पद्य रूप में आत्मकथा और अधिक विकसित नजर आने लगी। इसी काल में लिखित बनारसीदास जैन की 'अर्द्धकथानक' हिन्दी की पहली आत्मकथा मानी जाती है। यह आत्मकथा 1641 ई. में लिखी गई। हिन्दी साहित्य में गद्य का आविर्भाव आधुनिक काल में भारतेन्दु युग से माना जाता है। वास्तविक रूप से हिन्दी आत्मकथा साहित्य का आरम्भ इसी काल से माना जाता है। आत्मकथा की परिभाषा के विषय में विश्लेषण करने पर यह तथ्य सामने आया है कि दुनिया की लगभग सभी भाषाओं में और उनकी सभी विधाओं में विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए है। आत्मकथा संबंधी परिभाषाओं को आत्मसात् करने के लिए हम उनको पांच भागों में बांटते हैं।

1. संस्कृत की परिभाषाएँ
2. शब्दकोशों की परिभाषाएँ

3. अंग्रेजी कोश की परिभाषाएँ

4. भारतीय विद्वानों की परिभाषाएँ

5. पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाएँ संस्कृत की परिभाषाएँ -

डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा सम्पादित अभिनवकाव्यालंकार सूत्रम् में कहा गया है कि ''जीवनचरितस्यैव प्रकारविशेष आत्मकथा[4]।'' इसका अर्थ यह हुआ जीवन चरित का प्रकार विशेष आत्मकथा कहलाता है। आत्मकथा में आरम्भ से अंत तक उत्तम पुरूष का प्रयोग होना चाहिए। इसके कारण उसके सौन्दर्य में वृद्धि होती है। इस आधार पर जिन विद्वानों ने अपनी आत्मकथाएँ लिखी हैं उनमें प्रमुख हैं –

1. महात्मा गांधी

2. पण्डित जवाहर लाल नहेरू

3. विस्टन चर्चिल

4. बट्रेण्ट रसेल

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार - ''आत्मनः विषये कथ्यते यस्याम् साऽऽत्मकथा[5]।'' इस प्रकार आत्मकथा का अर्थ हुआ अपने स्वयं के विषय में जो बात कही जाए वह आत्मकथा है।

---

[4] डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी, अभिनवकाव्यालंकार सूत्रम्, पृ0 3/1/17

[5] हिन्दी साहित्य कोश भाग- 1, सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, पृ0 77

शब्दकोशों की परिभाषाएँ -

मानविकी पारिभाषिक कोश के अनुसार - ''अपने आतंरिक जीवन के ब्यौरेवार वर्णन को आत्मकथा कहा है[6]।'' इस प्रकार आत्मकथा वह होती है जिसमें अपने बचपन से वर्तमान तक वर्णन वह भी एक के बाद लगातार होना चाहिए। वृहद् हिन्दी शब्दकोश के अनुसार - ''आत्मकथा, आत्मन् और कथा का सामासिक रूप है जिसका अर्थ है, अपना, निज का, आत्मा का, मन का और कथा का अर्थ है अपनी जीवन कहानी।'' इस तरह से अपने जीवन की कहानी आत्मकथा हुई। मानव हिन्दी शब्दकोश के अनुसार ''जीवन की प्रमुख-प्रमुख बातों के वर्णन को आत्मकथा का प्रधान गुण माना है[7]।'' इस प्रकार मनुष्य के जीवन की प्रमुख बातों का वर्णन कला आत्मकथा का मुख्य गुण माना जाता है। आत्मकथा को इसी अर्थ में समझा जा सकता है। हिन्दी साहित्य कोश के भाग-1 के अनुसार आत्मकथा की परिभाषा - ''आत्मकथा लेखक के अपने जीवन से सम्बद्ध वर्णन है। आत्मकथा के द्वारा अपने बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन और एक-एक व्यापक पृष्ठभूमि में अपने जीवन का महत्त्व दिखलाया जाना संभव है[8]।'' यहाँ भी आत्मकथा का सम्बन्ध रचना से तथा उसे अपने जीवन को विस्तार से सामने लाना चाहिए। यही आत्मकथा का अर्थ बताया है। हिन्दी रत्नकोश के अनुसार - ''जीवन के

[6] मानविकी पारिभाषिक कोश, साहित्यिक खण्ड, सं० नगेन्द्र, पृ0 28

[7] वहीं, पृ0 2

[8] मानव हिन्दी कोश, प्रथम खण्ड, सं० रामचन्द्र वर्मा, पृ0 2

हाल को ही जीवन चरित्र कहा गया है[9]।'' यहाँ आत्मकथा का अर्थ सीधे शब्दों में जीवन का हाल बतलाया गया है और आत्मकथा को जीवन चरित्र कहा गया है। आदर्श हिन्दी शब्दकोश के अनुसार आत्मकथा का अर्थ - ''जीवन के वृतान्त या हाल को जीवन चरित्र कहा गया है[10]।'' यहाँ भी आत्मकथा का अर्थ व सम्बोधन हिन्दी रत्नकोश के समान ही है। हिन्दी शब्द सागर के अनुसार - ''जीवन चरित्र को जीवन भर का वृतान्त कहा है[11]।'' इस प्रकार हिन्दी रत्नकोश, आदर्श हिन्दी कोश और हिन्दी शब्द सागर में आत्मकथा की परिभाषा लगभग समान है तथा आत्मकथा को भी जीवन चरित्र के समकक्ष माना गया है। इससे यह पता चलता है कि कोशों में लगभग आत्मकथा को जीवन चरित्र के वर्णन के रूप में वर्णित किया गया है।

अंग्रेजी कोश की परिभाषाएँ -

यूनिवर्सल इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार - ''आत्मकथा को कला और लेखन क्षमता का परिचायक मानते हुए उसे स्वयं का लेखा-जोखा बतलाया है[12]।'' आक्सफार्ड डिक्शनरी के अनुसार - ''आत्मकथा की दो परिभाषाएँ दी हैं जो –

1. The writing of one's own history.

[9] हिन्दी रत्नकोश, संस्करण 3

[10] आदर्श हिन्दी कोश, सं० रामचन्द्र पाठक, संस्करण 1

[11] हिन्दी शब्द सागर, संस्करण 5

[12] Autobiograpy is the art and practice of writing a narrative of one's own life.

2. The story of one's written by himself [13]

इसके अनुसार आत्मकथा का अर्थ स्वयं द्वारा लिखा इतिहास है और स्वयं द्वारा स्वयं की कहानी है। इन्साइक्लोपीडिया अमेरिका के अनुसार - ''The life of individual naraated by himself in its broadest meaning the term includes memories,journals,diaries and leteers.[14]'' इसके अनुसार लेखक के व्यक्तिगत जीवन की कहानी है आत्मकथा। यहाँ आत्मकथा के रूप को विस्तार देकर उसे गद्य की अन्य विधाओं में भी आत्मकथा मिलना बताया गया है। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार - ''Autobiograph as the nomancleture of Southey implies is the biography of a person written by himself.its motivations are various among otherself serutenity for self indication, self justification.[15]'' इनसाइक्लोपीडिया आफ लिटरेचर के अनुसार - ''Autobiography is the naraation of a man's life by himself. It should contain greater guarantee of truth than any other form of biography.[16]'' इसके अनुसार एक नई बात सामने आई की आत्मकथा में सत्य का प्रयोग अन्य किसी विधा से अधिक होना चाहिए। माडर्न एनसाक्लोपीडिया के अनुसार - ''Autobiography denotes the art and practice of writing a continuous narrative of one's own

[13] The Oxford Dictionary vol. 1 pg no. 573
[14] The encyclopedia America Vol 2nd pg no 639
[15] Encylopedia of Britanica vol 2nd pg no 783
[16] Cassel's Encylopedia of litreture. By S.H. Steipurh, pg 62

life. An autobiography may be a factual account of the author's life and carrer or a revelation of his personal intellectual and spiritual beliefs though the great examples are usually subjective and objectives.[17]'' यहाँ आत्मकथा को व्यक्तिगत और वस्तुगत दोनों रूपों में बताया गया है। इसे जीवन यात्रा और जीवन का वास्तविक वर्णन माना गया है। यहाँ एक बात और विशेष है कि आत्मकथा में से जीवन का प्रस्तुतीकरण लगातार होना चाहिए।

भारतीय विद्वानों की परिभाषाएँ -

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार - ''आत्मकथा अपने विषय में किसी मिथक की रचना नहीं करता, कोई स्वप्न-सृष्टि नहीं रचता, वरन् अपने गत जीवन के खट्टे मीठे, उजले-अंधेरे, प्रसन्न-खिन्न, साधारण-असाधारण संचरण पर मुड़कर एक दृष्टि डालता है। अतीत को पुनः कुछ क्षणों के लिए स्मृति में जी लेता है और अपने वर्तमान तथा अतीत के मध्य सम्बन्ध सूत्रों का अन्वेषण करता है[18]।'' नगेन्द्र जी आत्मकथा में मिथक का कोई स्थान नहीं मानते। आत्मकथा स्वयं के द्वारा स्वयं के जीवन के बारे में पीछे मुड़कर दृष्टि डालना है।

डॉ. त्रिगुणायत के अनुसार - ''आत्मकथा लेखक के जीवन की दुर्बलताओं, सफलताओं इत्यादि का संतुलन और व्यवस्थित चित्रण है जो उसके सम्पूर्ण

[17] The modern Encyclopedia vol 1968 pg no 228

[18] डॉ० नगेन्द्र आस्था के चरण, पृ0 231

व्यक्तित्व के निष्पक्ष उद्घाटन करने में समर्थ होता है[19]।'' त्रिगुणायत जी जीवन का संतुलित और व्यवस्थित वर्णन वह भी निष्पक्ष आत्मकथा कहलाता है।

श्रामावतार अरूण के अनुसार - ''आत्मकथा व्यक्ति के संघर्ष का सत्यांकित इतिहास है[20]।'' रामवतार जी आत्मकथा में संघर्ष के पलों के वर्णन को ज्यादा महत्त्व देने के पक्ष की बात करते हैं व आत्मकथा को सत्य के इतिहास से जोड़ने की बात करते हैं।

डॉ. श्याम सुन्दर दास के अनुसार - ''जिस समय जैसी भावना मेरे मन में थी और जिन उद्देश्यों से प्रेरित होकर जो काम मैंने किया है तथा जिस प्रकार मेरे कार्यों में विघ्न-बाधाएँ उपस्थित हुई हैं, उनका मैंने यथा तथ्य वर्णन किया है[21]।'' श्यामसुन्दर दास अपने मन की भावना, उद्देश्य तथा बाधाओं के यथा रूप में वर्णन को आत्मकथा मानते है।

डॉ. नित्यानंद तिवारी के अनुसार - ''आत्मकथा स्वयं लेखक के द्वारा उसके अपने जीवन का सम्बद्ध वर्णन है। प्रायः दो उद्देश्यों को लेकर आत्मकथा लिखी जाती है। 1. आत्म-निर्माण या आत्म परीक्षण 2. दुनिया और समाज के जटिल परिवेश में अपने आपको जानने समझने की इच्छा[22]।'' तिवारी आत्म-निर्माण और अपने आपको समझने की इच्छा को आत्मकथा मानते है।

---

[19] डॉ० त्रिगुणायत, शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, भाग 2, पृ0 508

[20] पोद्दर रामवतार अरूण, अरूणायन: एक आत्मकथा, भूमिका से

[21] डॉ० श्यामसुन्दरदास, मेरी आत्म कहानी, निवेदन से उद्घृत

[22] डॉ० नित्यानंद तिवारी, साहित्य का स्वरूप, पृ0 98, एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली

यशपाल के अनुसार - ''आत्मकथा या आपबीती लिखकर मैं पाठकों के सम्मुख आदर्श-मार्ग रखने का संतोष अनुभव नहीं कर सकता। इसलिए इस कहानी को केवल स्मृतियों और अनुभवों का विचारार्थ वर्णन ही समझना चाहिए[23]।'' यशपाल आत्मकथा लिखने किसी सुख का अनुभव नहीं मानते अपितु वे केवल आत्मकथा को स्मृति, अनुभव और विचार मानते हैं। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार - ''आत्मकथा वस्तुतः रहस्य के प्रकाशन के लिए लिखी जाती है। व्यक्ति का जो स्वरूप सामान्यतया, साधारणतया, समाज के सामने नहीं आता, उसे लाना ही आत्मकथा का प्रयोजन है[24]।'' मिश्र जी आत्मकथा की कोई परिभाषा नहीं देते दिखायी दे रहे हैं वे आत्मकथा में रहस्य को प्रमुख मानते है, वह कैसा रहस्य, किस प्रकार का रहस्य इसके बारे में कुछ नहीं बताते, आगे वे आत्मकथा के प्रयोजन को महत्त्व देते है। अर्थात् आत्मकथा आत्मकथाकार के वे बातें जो समाज नहीं जानता है।

जैनेन्द्र के अनुसार - ''आत्म चरित्र लिखना एक प्रकार से आत्मदान का ही रूप है[25]।'' जैनेन्द्र भी विश्वनाथप्रसाद मिश्र की ही तरह आत्मकथा की परिभाषा न बताकर उसके रूप के बारे में बताते हैं। वे उन तथ्यों तथा बातों को बताना दान करना कहते हैं जिन्हें दुनिया नहीं जानती।

---

[23] यशपाल सिंहावलोकन, भाग 1, भूमिका से उद्घृत

[24] आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का 3-11-1976 का लिखा पत्र

[25] जैनेन्द्र, ये और वे, पृ0 166

पंडित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार - ''आत्मकथा स्वयं का मानसिक विकास अंकित करने का प्रयास है[26]।'' नेहरू जी आत्मकथा लिखने से मानसिक वृद्धि व विकास मानते है। गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार - ''आत्मकथा जीवन की स्मृति, जीवन का इतिहास नहीं है वह तो किसी अदृश्य चित्रकार को अपने हाथ की रचना है[27]।'' नेहरू आत्मकथा को एक चित्रकार के हाथ की चित्रकला मानते हैं जो अदृश्य है।

श्री इंद्र वंदन दुबे के अनुसार - ''आत्मकथा सत्यग्रहण, सत्यनिरूपण और सत्यसंवेदना के सर्जनात्मक पूर्ण प्रतिबिम्ब को आत्मकथा माना है[28]।'' हरिवंशराय बच्चन के अनुसार - ''आत्मकथा जीवन की तस्वीर है[29]।'' बच्चन जी आत्मकथा को एक दर्पण मानते है जीवन का। अमृता प्रीतम एक पंजाबी साहित्यकार हैं उनके अनुसार - ''आत्मकथा लेखक की अपनी आवश्यकता मानते हुए यथार्थ से यथार्थ तक पहुंचने की प्रक्रिया है[30]।'' अमृता प्रीतम एक लेखक के लिए आत्मकथा का लिखना आवश्यक मानती हैं ।

---

[26] जवाहर लाल नेहरू, मेरी कहानी, पृ0 7

[27] विश्व कवि रवीन्द्र, जीवन स्मृति, रवीन्द्र साहित्य भाग 18, पृ0 3

[28] श्री इंन्द्र वदन दबे, मशीनी आत्मकथा

[29] हरिवंशराय बच्चन, क्या भूलूँ क्या याद करूं, पृ0 1

[30] अमृता प्रीतम, रसीटी टिकट, पृ0 149

श्री प्रेमशंकर भट्ट के शब्दों में आत्मकथा - ''आत्मकथा अपने हाथ से खींचा गया अपना चित्र है[31]।'' भट्ट जी आत्मकथा को स्वयं के हाथों से खींचा स्वयं का चित्र मानते हैं ।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार - ''अपने द्वारा लिखी हुई अपनी जीवनी ही आत्मकथा है[32]।'' भोलानाथ तिवारी स्वयं के द्वारा लिखी आत्मकथा को जीवन कहते हैं। विजय कुमार शुक्ल के अनुसार - ''आत्मकथा अनुभूतियों का सर्जनात्मक विन्यास है[33]।''

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार आत्मकथा की परिभाषा -

कौलियर्स के अनुसार - ''Autobiography a form of biography in which the subject is also the author. It is generally written in the first person and covers most or an important phase of the author's life.

कैलियर्स आत्मकथा को लेखक का स्वयं का विषय बताते हैं और वे आत्मकथा को प्रथम पुरूष में लिखने पर बल देते है[34]।

---

[31] आचार्य प्रेमशंकर भट्ट, आत्मकथानी शरीर घटना नाम के लबे में

[32] डॉ० भोलानाथ तिवारी, हिन्दी साहित्य, सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, पृ0 400

[33] विजय कुमार शुक्ल, सेठ गोविन्ददास व्यक्तित्व और साहित्य, पृ0 255

[34] Callier's incylopedia vol. 3 पृ0 319

जे.टी. शिपले के अनुसार -The autobiography proper is connected narrative of author's life with stress laid on introspection or the significance of his life again a wider background. [35]''

विस्काउण्ट स्नोडन के अनुसार - ''हर व्यक्ति के पास कहने के लिए अपनी जीवन गाथा और कोई भी आत्मचरित कभी भी, यथार्थ में, बुरी पुस्तक नहीं होती[36]।''

कवि गेटे के अनुसार - ''जिसमें एक विद्वान वर्तमान तथा समयानुकूल परिस्थितियों द्वारा क्रमशः लिप्त होता है[37]।'' वेनशी मेकर के अनुसार - ''आत्मकथा व्यक्ति विशेष के द्वारा लिखी गई एवं प्रतिपादित एक सच्चा अभिलेख है, जिसमें लेखक के जीवन की सम्पूर्ण घटनाएं यथा संभव स्वयं लेखक द्वारा लिखी जाती है[38]।''

स्टीफनज्वीग के अनुसार - ''आत्मकथा जीवन स्मृति और जीवन के सत्यों का वर्णन है[39]।'' स्टीफन जीवन की सत्य स्मृतियों को आत्मकथा कहते हैं। शिल्पे के शब्दों में ''आत्मकथा लेखक के जीवन का एक शृंखलाबद्ध ऐसा विवरण है जिसमें वह अपने विशाल जीवन सामग्री की पृष्ठभूमि में से कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को लेकर उनको व्यवस्थित ढंग से सामने रखता है। फिर अपनी अन्तर्दृष्टि से

---

[35] J.T. Shiple Dictionary of world litreture पृ0 23

[36] विसकाउंट, ले. गोविन्ददास, आत्मनिरीक्षण भाग 1, निवेदन से उद्धृत

[37] Geothe Memories of revolutionist, Price Kropition, introduction पृ0 8

[38] Wayne Sheemaker English Autobiography पृ0 106

[39] Adepts in self partarature, Stefan zwig पृ0 536

उनको संस्मरण के रूप में प्रस्तुत करता है[40]।'' शिल्प एक तरफ आत्मकथा को शृंखलाबद्ध विवरण मानते हैं तो दूसरी तरफ वे आत्मकथा को संस्मरण के रूप में देखते हैं।

जार्ज मिच के अनुसार - '' A proboring of memory and description of facts of life is stephenzwig. [41]।''

भारतीय विद्वानों की अन्य परिभाषाएँ -

मैत्रेयी पुष्पा ने आत्मकथा के विषय में कहा है कि ''हर आत्मकथा एक उपन्यास है और हर उपन्यास एक आत्मकथा। दोनों के बीच सामान्य सूत्र फिक्शन है। इसी का सहारा लेकर दोनों अपने आपकी कैद से निकलकर दूसरे के रूप में सामने खड़ा कर लेते है, यानि दोनों कहीं न कहीं सृजनात्मक कथा गढ़ते हैं[42]।'' पुष्पा उपन्यास और आत्मकथा के गुणों को शायद एक समाने मानती है या फिर वह आत्मकथा को लेखक चरित्र और उपन्यास को किसी समाज विशेष पात्र का सत्य चरित्र मानती है। वे उपन्यास और आत्मकथा दोनों को गुणों की सृजनात्मकता की दृष्टि से देखती है। महाकवि दिनकर जी ने आत्मकथा के विषय में कहा है कि ''डायरी हो या आत्मकथा आदमी अपने सही रूप को उस तरह आंक नहीं सकता जिस तरह से उसे कोई तटस्थ व्यक्ति आंक सकता है। जीवन में हम बहुत से गलत काम करते हैं लेकिन उनका ध्यान हमें बराबर रहता है कि वे

---

[40] शिल्पे, ले गोविन्द त्रिगुणामत, शास्त्री समीक्षा के सिद्धान्त भाग 2, पृ0 508

[41] जार्ज मिच, Adepts in self partarature, पृ0 536

[42] मैत्रेयी पुष्पा, कस्तूरी कुंग्ल बसै, ब्लर्ब से उद्धृत

गलतियाँ हमारे लेखों में न आ जाएं। हम हर समय कोई न कोई मुखौटा लगाकर चलते हैं किन्तु मुखौटा लगाकर चलते हैं। किन्तु मुखौटा बहुत पुराना पड़ जाए, तो उसमें छेद हो ही जाते हैं। और सब मुखौटे के होने पर भी आदमी का रूप पारखियों से छिपा नहीं रहता। मगर मेरे लिए इसमें शरमाने की क्या बात हैं? आप और हम दोनों एक ही नाव पर हैं[43]।'' दिनकर जी का मानना है कि आत्मकथा में आत्मकथाकार अपना सही मूल्यांकन तटस्थ रहकर नहीं कर सकता क्योंकि वह स्वयं के द्वारा किए गए गलत को बताना नहीं चाहता। दिनकर और डॉ. नगेन्द्र दोनों इस विषय में एक समान विचार रखते हुए प्रतीत होते हैं इसी कारण डॉ. नगेन्द्र भी आत्मकथा को अर्धसत्य कहते हैं। प्रभा खेतान एक स्त्री विमर्शकार है उनके अनुसार - ''आप चौराहे पर एक-एक कर कपड़े उतारते जाते हैं। लिखने वाले के मन में आत्मप्रदर्शन का भाव किसी न किसी रूप में मौजूद रहता है, मन के किसी कोने में एक हल्की सी चाहत रहती है कि जो कुछ भी लिख रहा है उसे सही परिप्रेक्ष्य में लिया जाए, पर दर्शक अपना निर्णय लेने में स्वतंत्र है। उनका मन वे इस नाच को देखें या फिर पलटकर चले जाएं[44]।'' प्रभा खेतान आत्मकथा के लेखक की तुलना चौराहे पर खड़े होकर कपड़े उतारते व्यक्ति से की है और कपड़े उतारकर वह व्यक्ति नाच भी करता है। यह उसी प्रकार है जिस प्रकार एक व्यक्ति भीड़ के बीच अपने कपड़े उतार रहा और आत्मकथाकार अपने सत्य पाठकों

[43] रामधारी सिंह दिनकर, दिनकर की डायरी, भूमिका, पटना, पृ0 24.02.1933, पृ0 2

[44] प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, पृ0 255, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2010

के सामने बता रहा है और फिर नाचने का अर्थ है जब सब कुछ सत्य बता देता है तो फिर वह अपने वास्तविक किरदार में आता है तो आगे जीवन के कार्यों के बारे में बताता है। कृष्णा अग्निहोत्री के अनुसार - ''आत्मकथा मात्र ऐसे सुखद, रोमांटिक, सेक्सी किस्मों की किस्सागोई तो नहीं। रोजमर्रा की लड़ाई भी तो जीवन कर्म है। लंगड़ेपन में नीचे न बैठ पाने पर झाड़ू, पोछा, बरतन, खाना सब हैंडल करने के बाद लेखक कोई आनन्द की स्थिति तो नहीं।[45]'' कृष्णा अग्गिहोत्री आत्मकथा को कोई कहानी या किस्सा नहीं मानती अपितु आत्मकथा रोजमर्रा के घर के कार्यों में उलझे हुए कर्म भी हो सकते हैं। डॉ. स्नेहलता शर्मा ने आत्मकथा के विषय में कहा है कि ''आत्मकथा मानव के अनुभवों का आत्मीय शैली में प्रस्तुत किया जाने वाला लेखा-जोखा है[46]।'' डॉ. स्नेहलता शर्मा ने आत्मकथा के लिए आत्मीय शैली का प्रयोग करने का सुझाव व आत्मकथा में अनुभव को ज्यादा महत्त्व दिया है।

डॉ. मैनेजर पाण्डेय के शब्दों में आत्मकथा- ''पूरा पूरा सच बोलना आत्मकथा व जीवनी लेखक की नैतिक ही नहीं सौन्दर्यबोध की शर्त भी है।'' मैंनेजर पाण्डेय जी आत्मकथा में सत्य और सौन्दर्य बोध को भी स्वीकार करते है।

---

[45]डॉ० बापूराव देसाई, हिन्दी आत्मकथा विधा शास्त्र और इतिहास, पृ0 27, गरिमा प्रकाशन, संस्करण, 2011

[46] डॉ० स्नेहलता शर्मा, आत्मकथाकार बच्चन, पृ0 223, संस्करण 1986

भवानी लाल भारतीय के शब्दों में आत्मकथा - ''अपने आरम्भिक जीवन की कटु यथार्थता तथा उसके मंगलोन्मुख होने की कहानी आत्मकथा कहलाती है[47]।''

भवानीलाल भारतीय ने आत्मकथा को कटु यथार्थ कहा है। संस्कृत, शब्दकोशों, अंग्रेजी कोश, भारतीय विद्वानों और पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं के विश्लेषण के बाद आत्मकथा की परिभाषा के विषय में कहा जा सकता है कि आत्मकथा, आत्मकथाकार के निजी एवं सामाजिक जीवन का एक ऐसा दस्तावेज होता है जो सत्य पर आधारित होता है। आत्मकथा स्वयं के द्वारा स्वयं के उपर लिखा गया स्वयं के अनुभवों का ग्रंथ होता है। आत्मकथा अपने जीवन निजी पहलूओं को पाठक के सामने लाकर एक आदर्श प्रस्तुत करता है। आत्मकथा में लेखक के समस्त जीवन का अनुभव और घटनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम होता है। आत्मकथा जीवन का एक सार होता है। इसको लिखते समय लेखक जीवन में क्या खोया? क्या पाया? का अवलोकन करता है। लेखक अपने कर्मों को तुला में रखता है और अपने जीवन की सार्थकता को भी जांचता है।

1.2 **आत्मकथा की अवधारणा** -

वर्तमान समय में आत्मकथा गद्य साहित्य की एक तेजी से लोकप्रिय होती विधा है। इसके पीछे कारण यह है कि मनुष्य आज स्वयं के जीवन में झांकने की बजाए दूसरे के जीवन में ताक-झांक ज्यादा रखता है। आत्मकथा के माध्यम से

---

[47] वहीं, पृ0 27

आत्मकथाकार अपने जीवन के सफर में घटने वाली घटनाओं के आधार पर अपने निजी पहलूओं का वर्णन करता है। आत्मकथा में सबसे ज्यादा ध्यान सत्य पर होता है अर्थात् आत्मकथा का आधार सत्य है। आत्मकथा की विधा सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त सभी भाषाओं में मिलती है। अर्थात् जो व्यक्ति दुनिया के किसी भी कोने में रहता हो अगर वह आत्मकथा लिखना चाहता है तो वह अपनी मातृभाषा या अपने क्षेत्र की मानक भाषा में लिखेगा चाहे वह कोई भी भाषा हो। आत्मकथा में लेखक अपने प्रति तटस्थ भाव से अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है। इसका केन्द्र स्वयं आत्मकथाकार होता है। वह अपने अनछुए पहलुओं को पाठक के रखने का सामर्थ्य करता है। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में सत्य को स्पष्टता के साथ लोगों के सामने रखा। महात्मा गांधी द्वारा अपनी पौत्री और भतीजी के साथ नग्न सोने की बात उन्होंने स्वयं स्वीकार की। कुलदीप नैयर ने अपनी आत्मकथा एक जिन्दगी काफी नहीं' में लिखा है कि ''नोआखली ही वह जगह थी जहां, गांधी जी ने अपने ब्रह्मचर्य की परीक्षा का प्रयोग किया था। उनकी पौत्र-भतीजी नोआखाली आई हुई थी। गांधी जी ने मनु के साथ अपने ब्रह्मचर्य का प्रयोग करने का फैसला किया था। गांधी जी के पोते के अनुसार ''यह एक प्रयोग न होकर एक यज्ञ था, जिसके ईश्वर के सम्मुख अपनी यौनशक्ति की बलि दी जाती है।'' गांधी जी का कहना था कि अगर एक ही विस्तर में सोने के बावजूद उनमें या मनु में यौन भाावनाएं पैदा न हुई तो इस क्रिया से उनका शुद्धिकरण हो

जाएगा[48]।'' अगर लेखक आत्मकथा में अपने जीवन के शारीरिक संबंधों का भी वर्णन करता है तो उससे लोगों में लेखक प्रति घृणा न होकर उसकी स्पष्टता व साहस की तारीफ की जाती है। किन्तु समाज का सामान्य वर्ग इसे आत्मसात् करने में कतराता हे। इसके विषय में कुलदीप नैयर ने कहा कि ''जैसे ही उनके इस प्रयोग की खबर फैली हिन्दू और मुसलमान दोनों ही समुदायों में हैरत और शर्मिन्दा की लहर दौड़ गई। नेहरू से कुछ कहते न बन पा रहा था[49]।'' सामान्य जनता क्या देश का पहला प्रधानमंत्री शायद गांधी जी से इस कार्य से शर्मिदंगी महसूस कर रहा था। परन्तु वह आत्मकथा ही क्या जिसमें सत्य से पर्दा न उठाया गया हो। आत्मकथा के द्वारा लेखक के विषय में, उसके जीवन के विषय में बहुत कुछ नया जानने व समझने को मिलता है। आत्मकथा में लेखक के व्यक्तित्व के प्रत्यके पक्ष का वर्णन होना चाहिए। जैसे उसके गुण व दोष दोनों ही उसमें निहित होने चाहिए। जब भी कोई अपनी आत्मकथा लिखने लगता है और वह भी तटस्थ भाव से तो यह भी एक बहुत बड़ा साहस का काम होता है क्योंकि अपने जीवन के कुछ पहलू तो ऐसे होते है जिनके बारे में मनुष्य न तो स्वयं चर्चा करता है और न ही किसी उनके बारे में बताता। अगर ऐसी बातें को वह अपनी आत्मकथा में लिखता है तो निसंदेह यह साहस का कार्य है। आत्मकथा तो लिखना उस डॉ. के समान है जो किसी मरीज को ठीक करने के लिए उसकी

[48] एक जिन्दगी काफी नहीं, कुलदीप नैयर, अनुवाद युगांक धीर, पृ0 79, राजकमल प्रकाशन, छठा संस्करण 2020

[49] वहीं, पृ0 79

चीर-फाड़ करता है। इस चीर-फाड़ से डॉ. को कोई लाभ या हानि हो तो अपितु उस मरीज को राहत मिलती है। उसी प्रकार जब लेखक अपना आत्मचरित्र प्रकाशित करता है तो उसको पढ़कर पाठक को बहुत प्रेरणा मिलती। वह लेखक के जीवन से बहुत कुछ सीखता है। क्योंकि एक मनुष्य अगर स्वयं का प्रयोग करके सीखने लगे तो उसे सौजन्य भी कम पड़ जाएंगे। लेखक के बारे में पढ़कर पाठक के जीवन में बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। लेखक आत्मकथा लिखकर स्वयं पर स्वयं को हाथों कटार चलाता है। यह कटार समाज के किसी वर्गविशेष की आलोचना का भी शिकार हो सकती लेकिन लेखक भी कटार समाज में अनेक समस्याओं का समाधान करने में मदद करती है। लेखक जब साहस और वफादारी से अपनी आत्मकथा लिखता है तो कई बार कोई आहत भी हो सकता है। कोई बड़ा-विवाद या झगड़ा भी हो सकता है। लेकिन यह विवाद पाठक वर्ग के लिए समस्याओं के समाधान में बहुत ही सहायक सिद्ध हो सकती है। आत्मकथा में लेखक को किसी भी प्रकार की बात या तथ्य को न तो छिपाना चाहिए और न ही उनमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन करना चाहिए। आत्मकथा में महज लेखक का ही विवरण नहीं होता है। इसमें अपने समय के लोगों के बारे में जानकारी, परम्पराओं, में प्रचलित बातें अपने आस-पास का वातावरण, तत्कालीन समय की राजनैतिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, धार्मिक महत्त्व, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश भी निहित होता है। इसके अतिरिक्त किसी भी घटना या परिस्थिति पर स्वयं का दृष्टिकोण होता है। किसी समस्या ने निकलने का स्वयं

का समाधान आदि भी वर्णित होते है। प्रत्येक आत्मकथाकार अपनी आत्मकथा में अपने हिसाब या अपने अनुभव के आधार पर आत्मकथा का आरम्भ और उसमें घटनाओं को विस्तार देता है। कुछ आत्मकथाओं को हम उदाहरण स्वरूप देखते हैं जैसे - प्रभा खेतना ने अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में उस समय की परिस्थितियों का वर्णन बहुत अधिक किया है। वे लिखती है कि ''इधर जन जागृति के आनन्दोलन ने जोर पकड़ा और उधर भारत पाकिस्तान की लड़ाईई की रणभेरी बज उठी[50]।'' ऐसी अनेक घटनाओं व परिस्थितियों के बारे में प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा में लिखा है।

'आप हुदरी' की एक हिन्दी लड़की रमणिका गुप्ता ने अपनी आत्मकथा मे यौन समस्याओं के बारे में बहुत ही खुलकर अपने विचार व्यक्त किए हैं। वे कहती है कि ''यौन के बारे में भक्ष्य-अभक्ष्य क्या है, समाज इसका फैसला तो करता रहा है, पर उसने समय के साथ अपने मापदंड नहीं बदले। टकराव यही से शुरू हुआ। व्यक्ति बदलता रहा, प्यार की परिभाषाएँ, सुख की व्याख्या, यौन का दायरा, सब तो देशकाल के अनुरूप बदलता है। नियम व समाज न तो समय के साथ चले और न ही विकास की प्रक्रिया के साथ परिणाम् यौन की वर्जना, सुख की संकुचित सीमा, प्यार पर प्रतिबंध! मैंने अपनी देह की जरूरत पूरा करने का फैसला अपने हाथ में रखा[51]।'' जब रमणिका गुप्ता अपनी आत्मकथा में यौन संबंधी बातों का

---

[50] प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, पृ0 64

[51] रमणिका गुप्ता, आपहुदरी, पृ0 336

वर्णन खुलकर करती है तो पाठक भी दो वर्गों में बंटे दिखाई देते है। पहला वर्ग इसे अश्लीलता से जोड़ता है तो दूसरा वर्ग समस्या समाधान व स्पष्टता से जोड़कर देखता है। रमणिका गुप्ता यौन समस्याओं को उठाती है तो पद्मा सचदेव अपनी बूंद बावड़ी आत्मकथा में प्रत्येक समस्या को विस्तार देती है तो कहती है कि '' ये दर्द सिर्फ बटवारे के लोगों का ही नहीं है, उनका भी है जो 1965 व 1971 की पाकिस्तान, हिन्दुस्तान की लड़ाई में उजड़े जिनके भरे-पूरे घर आज भी उनका इन्तजार करते है। हमारे जवानों द्वारा जीता गया इलाका भारत ने जब थाली में परोसकर छोटे भाई पाकिस्तान को दिया, तब के उजड़कर आये लोगों को बसाने का यत्न किसी ने ना किया। इनके पास न नागरिकता है न वोट पाने का हक। सच है जब दो हाथ ताली बजाते हैं तय बीच में कौन जन्तु आकर मर जाता है, इसे जानने का प्रयास कोई नहीं करता[52]।'' पद्मा सचदेव प्रत्येक घटना को अपने शब्दों से व्यंग्य के माध्यम से वर्णित करती है। वह प्रत्येक घटना पर सवालिया निशान लगा देती है। यह प्रश्न पाठक के मन पर भी अपनी अमिट छाप छोड़ देते है। चन्द्रकिरण सौनरेक्सा ने अपनी आत्मकथा पिंजरे की मैना में रिश्तों के सम्बन्ध में विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए हैं ''मेरे अपने मन में फिर भी द्वन्द्व चल रहा था। बाबूजी आते रहते थे, वह नया सोचेंगे, मायके वाली चार स्थायी सदस्यों को देखकर, उन्हें जरूर क्रोध आयेगा। बहुत सोचा, परेशान रामो

[52] पद्मा सचदेव, बूंद बावड़ी, पृ0 93

जीजी से ही पता लगा था कि उनके लाहौर की मुंह बोली ननद के बेटे ब्रजलाल दिल्ली तिलक नगर में शरणार्थियों वाले क्वार्टर में रह रहे है[53]।'' ऐसी बहुत सी बातों से हमें आत्मकथा के लेखक के परिवार रिश्तेदारों आदि के बारे में भी जानकारी मिलती रहती है। बहुत बार ऐसा होता है कि जब लेखक अपने बारे में बताता है तो कोई ऐसा परिवार का सदस्य क्या दोस्त तक जो उसके साथ है उसके जीवन का भी बहुत कुछ हमें पता चल जाता है। आत्मकथा के लेखन में डायरी का बहुत अधिक महत्त्व होता है क्योंकि बहुत से लोग ऐसे होते है जो अपनी प्रतिदिन की बातें या कुछ प्रमुख घटनाओं को अपनी डायरी में लिख लेते हैं और बाद में उसे आत्मकथा का रूप दे देते है। आज बहुत से प्रतिष्ठित लोग अपने जीवन के बारे में लिखते हैं। वे ऐसी घटनाओं के बारे में बताते है। जिनसे समाज में एक सकारात्मक सोच व लोगों को प्रेरणा मिलती है। जब भी कोई व्यक्ति अपने जीवन के बारे में लिखता है तो वह किसी निश्चित उद्देश्य को लेकर चलता है। आत्मकथा का सम्बन्ध पूर्ण से व्यक्ति की भावनाओं से होता है। अगर कहा जाए कि भावनाओं की अभिव्यक्ति ही आत्मकथा है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। भावनाओं की अभिव्यक्ति मौखिक और लिखित दो रूपों में होती है। मौखिक रूप में तो मनुष्य के चेहरे के हाव-भाव भी उसके साथ होते है। किन्तु जब मनुष्य अपनी भावनाओं कोलिपिबद्ध करना चाहता है तो उसके सामने कुछ समस्याएं भी आती है, जैसे कुछ भावनाओं के लिए उसके पास उपयुक्त शब्द होते

[53] चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, पिंजरे की मैं ना, पृ0 268

हैं कुछ के लिए नहीं होते जब वह लिपि बद्ध करता है तो बहुत कुछ सोचना पड़ता है। शायद इसी कारण विश्वबन्धु शास्त्री विद्यालंकार ने हिन्दी की आत्मकथा साहित्य में लिखा है कि ''जब कभी किसी आत्मकथा लेखक के मन में सत्य और तथ्य का यथार्थ रूप प्रस्तु करने की इच्छा अत्यंत तीव्र हो उठती है, तभी वह तथ्य प्रतिपादन हेतु इतिहासकार के समान प्रमाण जुटाने के कार्य में लग जाता है[54]।'' आत्मकथा के माध्यम से पाठकों के जीवन में आई समस्याओं के समाधान करने में बहुत मदद मिलती है। लेखक का अनुभव लिपिबद्ध होकर पाठक को सही और गलत में अंतर करने की समझ को भी बढ़ाने में सहायता करता है। आत्मकथा के विषय में समाज का एक सामान्य मानव मानता है कि जीवन की सम्पूर्ण बातें कोई नहीं बताता, कुछ बातें तो लेखक भी छिपाते है। ऐसी अवधारणा का फैलाव बहुत अधिक होता है। उसी सामान्य मानव से कहा जाए की आप कौन सी ऐसी बात है जो किसी को नहीं बताते या बता नहीं सकते तो लगभग का उत्तर होता है शारीरिक संबंधों के विषय में। मैंने जब उन्हें स्त्री आत्मकथाओं के विषय में बताया कि बहुत सी स्त्रियों ने अपने जीवन संघर्ष के अतिरिक्त अपनी आत्मकथाओं में अपने शारीरिक संबंधों के विषय में खूब विस्तार से बताया है। अब बताओं आप तब भी गांव के सामान्य मानवी कहता है कि कुछ ना कुछ तो अवश्य पता है। इसके विपरीत एक पढ़े लिखे व शहरी तबके से आत्मकथा के विषय में मैंनें बात की तो उनमें अधिकतर लोगों का मानना था कि जब कोई

[54] विश्वबन्धु शास्त्री विद्यालंकार, हिन्दी का आत्मकथा साहित्य, पृ0 88

आत्मकथा लिखने की हिम्मत करता है तो वह सत्य लिखने की भी हिम्मत रखता है। यह दो प्रकार की अवधारणाएं मुझे देखने को मिली। आत्मचरित्र किसी पात्र में नहीं होता अपितु वह घटनाओं के रूप में बिखरा हुआ होता है । यह मनुष्य के जीवन की प्रमुख घटनाओं और अनुभवों को एकमाला में पिरोने का काम करता है, कड़ी से कड़ी जुड़ी होती है और वह आगे बढ़ती जाती है। आत्मचरित्र एक व्यक्तिगत निधि होती है। यह निधि रूपी पौधा लेखक की प्रबल इच्छा के फलस्वरूप अंकुरित होता है। जिस प्रकार पौधे का विस्तार उपर डाली व पत्तों के रूप में होता है और दूसरी तरफ उसकी जड़े भी जमीन में और गहराई तक जाती है। अर्थात् एक पौधे का विस्तार पृथ्वी के अन्दर और बाहर दोनों तरफ होता है। उसी प्रकार आत्मकथा के लेखक का विस्तार आत्मकथा में बाह्य और आंतरिक दोनों रूपों में देखने को मिलता है। आत्मकथा के विषय में यह अवधारणा भी होती है। इसके लेखक को स्वयं के प्रति भी तटस्थ होना चाहिए। बीते हुए पलों के सुख-दुःख आदि को कोई भी व्यक्ति बिना किसी डर भय के लिपिबद्ध करता है तो वह आत्मकथा कहलाती है। वास्तव में आत्मकथा बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन होती है। इस अवलोकन में अच्छे-बुरे जितने भी अनुभव होते हैं, वे पूरी निष्ठा व साहस के साथ पाठक के सामने प्रस्तुत करना होते है। जब कोई जिज्ञासु पाठक किसी की आत्मकथा पढ़ता है। तो वह वास्तव में उस लेखक के अंतर्मन को भी जान लेता है। आत्मकथा कोई मनोरंजन परक साहित्य नहीं है, अपितु यह पाठक में व्यक्ति को समझने व परिस्थितियों से निपटने की एक

समझ व कला को भी विकसित करती है। देखा जाए तो आत्मकथा विधा का आरंभ ही दूसरे के विषय में जानने व स्वयं के विषय में कहने के लिए ही हुआ है । आत्मचरित्र में लेखक अपनी भावनाओं को प्रस्तुत करता है। इससे पाठक को ऐसा लगता है जैसे बिना मिले ही उसने लेखक से मुलाकात कर ली हो। अर्थात् पाठक भावनाओं के माध्यम से लेखक से जुड. जाता है। आत्मकथाकार जब आत्मकथा लिखता है तब वह अपने चरित्र का मूल्यांकन व लेखन आंतरिक दृष्टि से करता है। इस आंतरिकता के साथ सत्य को मिलाकर जो दस्तावेज तैयार होता है, वह आत्मकथा का रूप होता है। आत्मकथाकार स्वयं का मूल्यांकन सत्य की कसौटी पर करता है। आत्मकथा के लिखने के लिए जिन घटनाओं व अनुभवों का लेखक वर्णन करना चाहता है, वह लेखक की व्यक्तिगत निधि है। जब पाठक इस व्यक्तिगत निधि को पढ़ता व महसूस करता है तो उसे ऐसा लगता है कि जैसे वह इन घटनाओं में लेखक के साथ है। बहुत बार पाठक आत्मकथा से ऐसे जुड़ जाता है जैसे वे घटनाएं उसके साथ ही घटित हो रही हों। आत्मकथा में लेखक वे सभी घटनां लिपिबद्ध करता है जो उसके साथ घटी होती है। आत्मकथा लिखते समय लेखक के सामने वे घटना या पल यथार्थ में होने की अनुभूति होती है। लेखक के सामने अतीतकी स्मृतियां इस प्रकार चलती है जिस प्रकार किसी मंद चलती गाडी से बाहर के दृश्य पीछे की ओर चलते दिखाई देते है। अर्थात् स्मृतियां सभी उसके ध्यान में आ जाती है लेकिन वे रूकती नहीं मंद गति से चलती रहती हैं। जब मुसाफिर को अपनी मंजिल मिल जाती है तो गाड़ी रूक

जाती है। और वह चारों तरह देखता है तो उसे कुछ भी गतिमान नहीं दिखता सब कछ अचल लगता है। यह स्थिति वह होती है जब आत्मकथाकार अपनी आत्मकथा लिख देता है जब वह उसी अतीत की गाडी से उतरकर वर्तमान में सवार हो जाता है। जो भी कोई आत्मकथा लिखने के बारे में सोचता है, उसमें सबसे पहले एक प्रबल शक्ति होनी चाहिए जो उसके अन्दर से स्फुटित होनी चाहिए। इस प्रबल शक्ति के परिणाम स्वरूप लेखक में सत्य को अंकित करने की शक्ति आती है इसी सत्य को लेखक पाठक के सामने यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है क्योंकि आत्मकथा का धरातल यथार्थ ही होता है।

बहुत से व्यक्तियों व लेखकों में अपने प्रेम संबंधों को सार्वजनिक करने की इच्छा नहीं होती या वे करना नहीं चाहते। ऐसे लेाग केवल अपने सार्वजनिक जीवन को ही सार्वजनिक कर सकते है। ऐसा ही एक प्रसंग जय शंकर प्रसाद के विषय में भी है। जब प्रसाद को हंस पत्रिका में अपनी आत्मकथा लिखने के लिए कहा गया तो उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया क्योंकि प्रसाद जी प्रेम संबंधों को नितान्त व्यक्तिगत थाती मानते है जिनको वे सार्वजनिक नहीं करना चाहते। उनका मानना है कि ऐसा करने से उसके प्रेम की पवित्रता समाप्त हो जाएगी।

प्रसाद जी ने शायद इसी कारण मना कर दिया आत्मकथा लिखने के लिए क्योंकि वे आत्मकथा के तत्त्वों को भली भांति जानते थे। वे सम्पूर्ण सत्य लिख नहीं पाते और अधूरे सत्य को वो आत्मकथा नहीं मानते उसी कारण उन्होंने आत्मकथा लिखने के लिए मना कर दिया।

आत्मकथा को सत्य की कसौटी पर खरा उतरने के लिए उसके लेखक के दो गुणों साहस व ईमानदारी की आवश्यकता होती है। आत्मकथा का महत्त्व व पाठक के लिए उसकी सार्थकता तभी हो सकती है जब आत्मकथाकार अपने अन्दी की घृणा व बुराइयों को ईमानदारी से लिपिबद्ध करें क्योंकि स्वयं के गुणों का बखान तो कोई नहीं कर सकता है। आत्मकथा के कुछ अंश पाठक के लिए एक धरोहर के रूप में भी हो सकते है जैसे किसी दुर्गम परिस्थितियों से लेखक किस प्रकार निकला व अपने जीवन को किस प्रकार सार्थक बनाया। आत्मकथा किसी लेखक की ही नहीं हो सकती। आत्मकथा कोई भी लिख सकता है। किन्तु प्रसिद्धि उन्ही आत्मकथाओं को मिलती है, जिनके लेखक प्रसिद्ध व्यक्ति या कोई महापुरूष हो। महापुरूषों की आत्मकथाओं से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। महापुरूषों के जीवन अने विषय परिस्थितियों आई होती है। उसका समाधान करके कैसे उन्होंने सफलता प्राप्त की? कैसे जनता का सहयोग प्राप्त किया? आदि अनेक प्रसंग हमें मिलते हैं। भारत व विश्व में अनेक महापुरूष हुए जिन्होंने अपनी आत्मकथाएं लिखी और समाज व राष्ट्र के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनी। भारत में महात्मा गांधी की आत्मकथा सत्य के प्रयोग, पंडित जवाहर लाल नेहरू की आत्मकथा 'भारत एक खोज' में अनेक ऐसी घटनाएं, अनुभव व संघर्ष की दास्ता है, जो पाठक को अन्दर तक झकझोर देती है। इनके अतिरिक्त आजकल क्रिकेटर, खेल जगत में प्रसिद्ध खिलाड़ी, फिल्मकार, राजनेता, अध्यापक, व्यवसायी आदि लगभग स्वयं के क्षेत्र के ये प्रसिद्ध लोग जो फर्श से अर्श तक पहुंचे उन्होंने अपने

जीवन को लिपिबद्ध करने का साहस पूर्ण कार्य किया है। जो लोागें को उनके क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। बहुत से लेखक ऐसे होते है जो संकोची प्रवृति होते हैं। ऐसे व्यक्ति आत्मकथा लिखने के नाम पर, लेखनी चलाने के नाम पर साहस नहीं कर पाते क्योंकि उनका सम्पर्क ऐसे लोगों से होता है जो या तो लेखक के दुर्व्यवहार का शिकार होते हैं, या लेखक उनके दुर्व्यवहार का शिकार होता है। दोनों ही परिस्थितियों को शायद लेखक बताना या सार्वजनिक न करना चाहता हो। आत्मकथा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा स्वयं को प्रस्तुत या प्रकट किया जाता है। समाज में स्वयं को प्रकट करने या अपनी एक अलग पहचान बनाने की तमन्ना सभी को मन में होती है। इसी तमन्ना या इच्छा को किसी न किसी रूप में जाहिर करना चाहता है। इसी कारण वह अपने मन में संतोष उत्पन्न करने के लिए आत्मकथा लिखता है। शायद इसी कारण आज आत्मकथा लेखन में इतनी वृद्धि हो रही है। "हंस" पत्रिका के आत्मकथा विशेषांक में कृष्णनंद गुप्त ने लिखा है कि ''व्यक्तिगत को प्रकट करने की लालसा ने जहां उपन्यास, नाटक, प्रबंध, कहानी अथवा गीति काव्य को जन्म दिया है, वहीं आत्मकथा जैसी वस्तु की वही जननी है। अपने को व्यक्त करने की गुंजाइश उपन्यास, नाटक में कम है। वह गुण कविता में कुछ ज्यादा है। परन्तु आत्मकथा द्वारा हम सही या गलत अपने को ही व्यक्त करते है[55]।'' सही और गलत का मापदण्ड समाज के हाथों में होता है क्योंकि मनुष्य जीवन पर समाज के नियमों

[55] कृष्णनंद गुप्त, हंस वाणी, हंस आत्मकथांक, जनवरी-फरवरी, 1932

का पालन करता हुआ ही आगे बढ़ता है, किन्तु आत्मकथा में लेखक अपने किए गए कार्यों को तुला पर रखने की कोशिश करता है जिसके कारण वह अपने जीवन की सार्थकता को जान जाता है।

1.3 **आत्मकथा की उपादेयता एवं प्रासंगिकता**

साहित्य की रचना के पीछे उनके उद्देश्य होते हैं। वैसे यह आवश्यक भी नहीं है कि प्रत्येक साहित्यिक रचना के पीछे कोई उद्देश्य ही हो। पाश्चात्य विद्वान 'कला को कला के लिए' कहकर साहित्य को उद्देश्य हीन करन की बात करने पर जोर देते हैं। किन्तु हमारा सनातन चिंतक जीवन के प्रत्येक पहलू को साहित्य और कला से जोड़ने की बात करता है। इसके के कारण साहित्य को उपादेयता और प्रासंगिकता बनी रहती है। अगर साहित्य को मनोरंजन के उद्देश्य से देखा जाए तो साहित्य अपनी उपादेयता और प्रासंगिकता दोनो ही खो देगा। साहित्य में मुख्य रूप से पद्य और गद्य दो विधाएं है किन्तु गद्य के अंतर्गत अनेक विधाएं आती है। इस प्रकार पद्य और गद्य की विभिन्न विधाएं अपने अपने गढ़ से जीवन को प्रस्तुत करने का कार्य करती ळै। अगर जीवन से जुडाव की बात की जाए तो सभी विधाओं में 'आत्मकथा' से पहले आती है। आत्मकथा का सीधा सम्बन्ध जीवन के जुड़ाव से होता है। हमारे जीवन के लिए अनेक तत्त्वों की उपयोगिता होती है जिन्हें प्राप्त करने के लिए मनुष्य जीवन भी प्रयासरत रहता है। मनुष्य अपने जीवन की सार्थकता के अनुसार सम्मान, धन, बल आदि प्राप्त करने में लगा रहता है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में इस बात का बहुत अच्छी प्रकार से मिलता है। आचार्य मम्मट ने अपने काव्यप्रकाश नामक ग्रंथ में इस बात को बहुत ही स्पष्ट रूप से कहा है -

''काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतवे। सद्य परनिर्वृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।'' इस प्रकार साहित्य की साहित्य की रचना भी अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए की जाती है। संस्कृत विद्वान ही नहीं अपितु हिन्दी विद्वानों ने भी ऐसी रचना करने पर जोर दिया है, जो स्वयं को आनंद प्रदान करने पर बल देती हो। आत्मकथा का उद्देश्य और उसकी प्रासंगिकता भी तभी होगी जब उसका कोई उद्देश्य होगा। आत्मकथा की सबसे बड़ी उपादेयता यह होती है कि मनुष्य अपनी उन्नति के अपने परीक्षण कर सके। इसके द्वारा लेखक ही अपितु पाठक भी लाभान्वित होते है। मनुष्य अगर स्वयं गलती करके सीखने लगे तो उसे सौ जन्म भी कम पड़ जाएंगे वह दूसरों की गलतियों से भी सबक लेता है। आत्मकथा उसके लिए सबसे अच्छा माध्यम होता है। आत्मकथा के द्वारा मनुष्य अपने अतीत का अवलोकन करता है और अपने बीते हुए पलों में कुछ समय में कुछ समय के लिए चलाया है। जहां उसे आनन्द मिलता है। क्योंकि जब हम अपने अतीत के कार्यों को याद करते हैं। तो हमें अपने आप पर ही हंसी आती है। इसके माध्यम से अतीत की स्मृतियां ताजा हो जाती है। आत्मकथा के द्वारा मनुष्य अपनी अस्मिता की स्थापना करना चाहता है। इससे उसे समाज में एक उचित स्थान भी मिलता है। मनुष्य अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति भी आत्मकथा के द्वारा व्यक्त करता है। आत्मकथा के माध्यम से लेखक अपनी समस्याओं को प्रस्तुत कर उनको याद करने के उपाय जो स्वयं ने अपनाए समाज के सामने प्रस्तुत करता है। हमारे साहित्य व हमारी संस्कृति में कोई भी तत्त्व

ऐसा नहीं है जिसकी उपादेयता न हो। जिस साहित्य की कोई उपादेयता या प्रासंगिकता न हो ऐसी परिकल्पना हमारे यहां नहीं है। साहित्य सभी विधाओं मेंजीवन की उपादेयता या प्रासंगिकता ना हो ऐसी परिकल्पना हमारे यहां नहीं है। साहित्य सभी विधाओं में जीवन की उपादेयता सबसे अधिक आत्मकथा में ही होती है। क्योंकि आत्मकथा की उपादेयता उसके लेखक व पाठक होने के होती है। अगर कहा जाए की आत्मकथा की उपादेयता लेखक से अधिक पाठक के लिए होती है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं हो सकती। क्योंकि लेखक तो अपने जीवन की समस्या उनके समाधान और अनुभवों को लिपिबद्ध करता है परन्तु पाठक तो उन सभी से जीवन जीने की कला सीखता है। इस प्रकार आत्मकथा को उपादेयता पाठक के लिए अधिक होती है। जब किसी की उपादेयता होती है तो वह प्रासंगिक तेाअपने आप ही हो जाती है। आत्मकथा की उपयोगिकता केवल यही तक ही नहीं है इसके माध्यम से समाज का अवलोकन भी होता है। उस समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, आदि परिस्थितियों का अध्ययन भी किया जाता है। इनके बारे में भी हमें जानकारी मिलती है।

उपादेयता एवं प्रासंगिकता

समाज को व्यक्ति दो प्रकार से देखता व अनुभव करता है। पहला - सामूहिक स्तर पर और दूसरा व्यक्तिगत स्तर पर। समाज सामूहिक रूप से तो मनुष्य को लाभ देने की कोशिश करता है। परन्तु जब व्यक्तिरूप से मनुष्य को देखता है, तो उसे कोई महत्त्व नहीं देता। मनुष्य इन सभी के बारे में सोचता समझता है

और अपने अनुभवों का ग्राफ बढ़ाता रहता है। साहित्य की चाहे कोई भी विधा हो उसकी उपादेयता और प्रासंगिकता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी साहित्य वर्तमान समय में कैसी व कितनी जरूरत है ? सामान्य मानवी से वह किस स्तर तक जुडी हुई है और वह जीवन को कहां तक प्रभावित कर रही है? इसके साथ-साथ वह विधा तेजी से बदलते मानवीय मूल्यांकन को किस स्तर तक प्रभावित करती है। अर्थात् जो जीवन व्यक्ति व समाज को जीतनी अधिक प्रभावित करेगी वह उतनी ही उपयोगी और प्रासंगिक होगी। इस आधार पर अगर हम आत्मकथा की उपादेयता और प्रासंगिकता पर विचार करते हैं तो हमें दिखायी देता है कि वर्तमान समय में इसकी उपादेयता और प्रासंगिकता प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इसकी मांग बढ़ने के पीछे अनेक कारण है। मनुष्य एक समय के बाद अपनी बनावटी दुनिया, बनावटी व्यवहार आदि से तंग हो जाता है। और वह वास्तविकता की तरफ जाना चाहता है। इस वास्तविकता का आईना आत्मकथा होती है। जिसमें न कोई मुखौटा होता है न कोई बनावटीपन होता है, होती है तो केवल वास्तविकता। पाठक भी एक समय के बाद जीवन के वास्तविक अनुभवों को पढ़ना चाहता है जिसकी मांग आत्मकथा के द्वारा ही पूरी हो सकती है। आत्मकथा में एक वास्तविक मनुष्य दिखाई देता है। जो किसी भी प्रकार का आवरण लिए हुए नहीं है। इस विषय में बंगलादेश से निष्कासित लेखिका तसलीमा नसरीन ने कहा है कि ‘‘आत्मकथा के नाम पर में अपने पाठकों को कोई रच गढ़कर उपहार नहीं दे रही हूँ। जीवन में जो कुछ भी है, वह सच हैं और सच

हमेशा शोभा और सुन्दर नहीं होता। जैसे ये सुन्दर को कबूल करती हूँ उसी तरह असुन्दर को भी कबूल कर सकती हूँ[56]।'' इस प्रकार जीवन में सुख-दुःख दोनों होते हैं और दोनों की अभिव्यक्ति का अपना महत्त्व होता है। जीवन में वहीं अभिव्यक्ति अच्छी लगती है जो वास्तविक होती है। आत्मकथा लिखना लगभग सभी गद्य विधाओं में दुष्कर कार्य है। ऐसा कार्य जो जोखिम लेकर किया जाता है वह होने वाली किसी नई परम्परा की आहट होती है। इसी आहट के परिणाम स्वरूप किसी नई परम्परा का विकास होता है। जोखिम लेकर लिखा गया साहित्य भी अपने महत्त्व को बढ़ाता है। आत्मकथा के अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष सामने आता है कि मनुष्य को हमें उसके गुण-दोषों सहित स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य में गुण-दोष दोनों ही व्याप्त होते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक मनुष्य में कमियां होती है। किसी की कमी देखकर उससे दूर जाना मानव धर्म नहीं है क्योंकि किसी मनुष्य में एक कमी जो दूसरे में नहीं है तो दूसरे कोई दूसरी कमी हो सकती है। किसी भी मनुष्य को पूर्ण रूप से स्वीकार करना हमें आत्मकथा के द्वारा ही सिखाया जाता है। इसका कारण यह है कि आत्मकथा का आधार सत्य होता है।

आत्मकथा पूर्ण रूप से लेखक की एक स्वतंत्र अभिव्यक्ति होती है इसी कारण लेखक को अपने जन्म और विकास के लिए एक ऐसी सामाजिक संस्कृति की

[56] तसलीमा नसरीन, छोटे-छोटे दुख, पृ0 248-249

आवश्यकता होती है जिसके द्वारा उसका पोषण हो सके। आत्मकथा की उपादेयता के विषय में पंकज चतुर्वेदी ने कहा है कि ‘‘मनुष्य का जीवन किन्हीं आकस्मिक चमत्कारी अथवा प्राकृतिक विधान के सर्वथा अतिक्रमण में घटित नहीं होता। समय और स्थान के कुछ निश्चित संदर्भों में वैचारिक सिंहावलोकन का साहित्य रूप है। अतः इसका महत्त्व निर्विवाद है[57]।’’

किसी भी रचनाकार की उर्जा उसका पाठक होता है इसी कारण रचनाकार पाठक से जुड़ना चाहता है। यह जुड़ाव तभी हो सकता है जब रचनाकार वास्तविक रूप से अपने अनुभव पाठक के सामने रखे। इस कार्य में आत्मकथा अपनी बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। क्योंकि लेखक अपने अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करने का काम करता है। इसी के परिणाम स्वरूप आत्मकथा लेखन में निरन्तर बढ़ोतरी देखी जा रही है। आज के समय में रिश्तों के दबाव और संबंधों की ओर में मनुष्य वास्तविकता से आंखे फेर लेता है। मनुष्य अपनी सामाजिक संस्कारों और विरासत के कारण जो वास्तविक बाते कहना चाहता है वह कह नहीं पाता किन्तु आत्मकथा के माध्यम से वह इन सभी जंजीरों को तोड़ देता है। आत्मकथा में उसका उद्देश्य सच्चाई से अपनी बात रखने का होता है। इस आधार अगर देखा जाए तो महिला आत्मकथाओं सच्चाई व वास्तविक बहुत अधिक और स्पष्ट दिखाई पड़ती है। यह पहल एक नए विमर्श व अभिव्यक्ति की स्पष्टता को जन्म देती है। महिला

---

[57] पंकज चतुर्वेदी, आत्मकथा की संस्कृति, पृ0 35

आत्मकथाकार सशक्त रूप कि अपने जीवन के अनुभव पाठक के सामने रखने का काम कर रही है। वर्तमान समय में महिला आत्मकथाओं की वृद्धि का कारण पहले की अपेक्षा अब अधिक जागरूक होना भी है। एक महिला के संघर्ष की कहानी उसी तक सीमित नहीं रहती अपितु वह सम्पूर्ण महिलाओं के संघर्ष की प्रतीक होती है। महिलाओं के वास्तविक संघर्ष की अभिव्यक्ति आत्मकथाओं में देखने को मिलती है। आज महिलाएं इस बात से भली-भांती परिचित हो गयी है कि समाज में उनका स्थान पुरूषों से कम नहीं है। उन्हें यह लगने लगा है कि अब समय आ गया है कि वे अपने जीवन के फैसले किसी को इच्छा से न करके स्वयं करें। वे अपनी पहचान व अस्मिता के लिए रूढ़िवादी ताकतों से लडे उनके प्रति विद्रोह करें और अपने अधिकारों की रक्षा करें |

महिला आत्मकथाकारों ने अपने साथ किए गए प्रत्येक स्तर के शोषण को उजागर करके पुरुषप्रधान व्यवस्था के ढोंग को सामने लाने का काम किया है। इसी आज आत्मकथा की उपादेयता और प्रासंगिकता बढ़ रही है। आत्मकथा की प्रासंगिकता और उसकी उपादेयता को उजागर करते हुए डॉ. राजेन्द्र यादव ने कहा है कि ‘‘स्त्रियों को प्रारम्भिक रचनाएं, चाहे वे आत्मकथा हो, कविता कहानी हो या दूसरी अभिव्यक्तियां, जब से आगे कैदियों की व्यथा कथाएं की हैं। उनका बोलना ही जेलर की अत्याचार-कथाओं के विवरण देना है। पहले डरते डरते और बचाकर,

और फिर खुलकर वे अपने नियंत्रकों के चेहरे उजागर करती है[58]।'' इस प्रकार जब चेहरे पर जो अभिव्यक्ति होती है जब वह कागज पर लिपिबद्ध होती है तो आत्मकथा का रूप ले लेती है। पुरूषों की आत्मकथाओं की तरह महिला आत्मकथाओं में अहं की संतुष्टि न होकर जीवन के अतीत पक्षों का समायोजन होता है। महिलाएं अपनी आत्मकथाओं में अपनी विजय की पताकान लहराकर अपने वास्तविक अनुभव व संघर्ष का ब्यौरा देती है। इसी संदर्भ में राजेन्द्र यादव ने कहा है कि ''पुरूषों की आत्मकथाएं उनके निजी संघर्षों की विजय गाथाएं है। विपरीत और विषम स्थितियों से लड़ता हुआ पुरूष अपना अद्‌वितीय व्यक्तित्व गढ़ता है। वह किसी दसरे की कहानी नहीं हो सकती। प्रेरणा स्त्री का संघर्ष भी बनता है मगर उसकी कहानी हर दूरी स्त्री की कहानी भी है। स्त्री की कथा किसी दूसरे की कथा है। वह हमसे अलग किसी और नक्षत्र का अनुसंधान है[59]।'' महिला आत्मकथाकारों ने आज साहित्य जगत व पाठक वर्ग में अपनी लोकप्रियता व एक पहचान बना ली है। यह पहचान केवल अपने दम व सत्य लिखने की हिम्मत का परिणाम है।

आत्मकथाकार बड़ी ही निर्भीकता से जीवन के लगभग हर पहलू पर अपने विचार व्यक्त करते है। वह मन पर पड़े प्रभाव तथा जो महसूस हुआ उसे लिखता है और समाज को जागरूक करने का प्रयास करता है। महिला आत्मकथाकार की

[58] सम्पादक राजेन्द्र यादव, देहरी भई विदेश, पृ0 20

[59] वहीं, पृ0 18-19

परिस्थिति उस समाज व उस स्थान पर रहने वाली लगभग महिलाओं की समान होती है। वह अपने अनुभव अब लिखने लगी है। कौसल्या नंदेश्वर बैसंती का कहना है कि ‘‘मैं लेखिका नहीं हूं, ना साहित्यिकार, लेकिन अस्पृश्य समाज में पैदा होने से जातीयता के नाम पर जो मानसिक यातनाएं सहन करनी पड़ी उसका मेरे संवेदनशील मन पर असर पड़ा। मैंने अपने अनुभव खुले मन से लिखे हैं। पुरूष प्रधान समाज औरतों का खुलापन बरदाश्त नहीं करता। पति तो ताक में रहता है कि पत्नी पर अपने पक्ष को उजागर करने के लिए चरित्रहीनता का ठप्पा लगा दे[60]।’’ व्यक्तिगत संबंध आदि पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त करता है। जीवन में आई विकट परिस्थिति व उनका समाधान करते हुए हो जो जीवन जीता है और उस जीवन को लिपिबद्ध कर समाज के समाने प्रस्तुत करता है वही आत्मकथा है। ऐसे जीवन की उपयोगिता और प्रासंगिकता बहुत अधिक बढ़ जाती है। आत्मकथा की उपादेयता और प्रासंगिकता के विषय में डॉ. रत्नाकर पांडेय ने कहा है कि ‘‘यदि हमारे जीवन की स्मृतियों को क्षणभंगुर जीवन के साथ सुख-दुःख का संसार समेटे भविष्य में काल-कलवित नहीं होने देना है तो आत्मकथा लिखने का अनुभव जब तक मानवता रहेगी तब तक किया जाता रहेगा[61]।’’ आत्मकथा मानव जीवन के वर्णन के साथ-साथ चलती रहेगी। प्रौद्योगिकी के इस युग में सारा संसार एक गांव की भांति नजर आता है। दुनिया इतनी तेजी से

[60] कौसल्या बैसंती, दोहरा अभिशाप, पृ0 8

[61] डॉ० रत्नाकर पाण्डेय, पत्रकार प्रेमचदं और हम, पृ0 146

बदल रही है कि किसी के पास भी समय नहीं है। इस भाग-दौड़ भरे जीवन में हम किसी रचनाकार की आत्मकथा को पढ़ने के लिए समय निकालते है तो इसका अर्थ यह हुआ की उस रचना में कुछ खास है। किसी मनुष्य जीवन में आए अनेक बदलावों के बारे में जानना, उसके व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में पढ़ना पाठक को अच्छा लगता है। उससे पढ़ने में भी रोचकता आती है। लगभग सभी साहित्यिक विधाओं में आत्मकथा एक ऐसी विधा है जिसमें मनुष्य सामान्य से विशिष्ट होने की प्रक्रिया से गुजरता है। इस क्रमिक प्रक्रिया में आम से लेकर खास व्यक्ति तक सभी की दिलचस्पी होती है। स्फ़ूरना देवी, प्रतिभा अग्रवाल, कुसुम, अंचल, कृष्णा अग्निहोत्री, पद्मा सचदेवा, प्रकाशवतीपाल, शीला झुनझुनवाला, मैत्रेयी पुष्पा, बेबी हालदार, रमणिका गुप्ता, मन्नू भण्डारी, प्रभा खेतना, महात्मा गांधी, यशपाल, राजेन्द्र यादव, वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद, स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि रचनाकारों की आत्मकथाएं पढ़ने के बाद पता चलता है कि व्यक्ति से व्यक्तित्व और व्यक्तित्व से सम्पन्न निजी अस्तित्व कैसे उत्पन्न होता है। साहित्य की विधाएं जैसे, कविता, उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र संस्मरण आदि लिखने के लिए लेखक होना पड़ता है। किन्तु आत्मकथा लिखने के लिए लेखक होने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि आत्मकथा का आरम्भ तो मनुष्य के जन्म के साथ ही हो जाता है। आत्मकथा के द्वारा हमें आत्मकथाकार के जीवन के बारे पता चलता है। इसके साथ-साथ आत्मकथा के द्वारा हमें अनेक ऐसे भेदों या रहस्यों के बारे में पता चलता है जो पहले पर्दे में थे। आत्मकथा के द्वारा ऐसे

झूठ से भी पर्दा उठाया जाता है जो दबा रह गया था। शराफत का नकाब ओढ़ने वाले लोगों के नकाबों को आत्मकथाओं में उतरते देखा जा सकता है। जो लोग समाज सेवी, नियम पर चलने वाले, कानूनों का वाले, सिद्धान्तवादी होने का दम भरने का दावा करते हैं उसकी असलियत क्या है? इनका पता हमें आत्मकथाओं के माध्यम से ही चलता है। आत्मकथा केवल व्यक्तिगत अनुभव ही नहीं है अपितु यह भावी पीढ़ी में साहित्य की समझ उत्पन्न करने का काम करती है। इस विधा का एक सबसे बड़ा फायदा यह है कि हमें इन्हें पढ़कर अपने पूर्वजों को अनुभवों का फायदा उठा सकते हैं। आने वाली पीढ़ी भी आत्मकथा के माध्यम से इसका लाभ उठा सकती है। आत्मकथा के द्वारा ही हमें पता चलता है कि हमारे पूर्वज और क्या करना चाहते थे अर्थात् उनके कोई स्वप्न जो अधूरे हैं, उनको पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है। इसी कारण यह बहुत आवश्यक है कि प्रत्येक युग में ज्यादा से ज्यादा आत्मकथा लिखी जाएं। जिनका लाभ भावी पीढ़ी को मिलता रहे। मुंशी प्रेमचंद का मानना था कि आत्मकथा का सम्बन्ध आम आदमी से होता है। मुंशी प्रेमचंद ने हिन्दी के आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी के उस बयान का उत्तर दिया था जिसमें आचार्य जी ने कहा था कि साहित्यकार की मूल प्रवृति मौन की होनी चाहिए और साहित्यकारों को अपने मुंह मियां मिट्ठू नहीं होना चाहिए। इस पर प्रेमचंद ने कहा था कि ‘‘मेरा ख्याल है कि मेरे घर के मेहतर के जीवन में भी कुछ ऐसे रहस्य है, जिनसे हमें प्रकाश मिल सकता है। किसी भी मनुष्य का जीवन इतना तुच्छ नहीं है जिसमें बड़े से बड़े महच्चरितों के लिए भी

कुछ न कुछ विचार की सामग्री न हो। महच्चरित इसी तरह बनते हैं[62]।'' इस प्रकार यह बात तो स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अपने अन्दर कुछ न कुछ चिन्तन के भाव लिए हुए होता है जो बड़े-बड़े विद्वानों के लिए विचार सामग्री का काम करता है। वर्तमान समय में ऐसा कोई भी साहित्यकार नहीं है जो आत्मकथा लेखन का विरोधी हो। साहित्यकार ही नहीं अपितु किसी भी क्षेत्र का कोई भी व्यक्ति इसका विरोध नहीं करता। आज साहित्यकारों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के लोगों को भी आत्मा मिलती हैं। आज, राजनेता, खिलाड़ी, व्यापारी, गृहस्थी, इंजीनियर, किसान, मजदूर आदि लगभग सभी तरह के काम करने वाले जिन्होंने अपने काम के द्वारा अपनी क्षेत्र में नाम कमाया वे अपनी आत्मकथा लिख रहे हैं। इस कारण आत्मकथा की उपादेयता और प्रासंगिकता का अनुमान बहुत ही सहज रूप से लगाया जा सकता है। जिस क्षेत्र का जो व्यक्ति होता है वह अपने क्षेत्र में शीर्ष पर पहुंचे लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहे तो आत्मकथा से अच्छा और कोई विकल्प हो ही नहीं सकता। वह अपने क्षेत्र के लोगों की आत्मकथाएं पढ़कर अपने क्षेत्र में आगे कैसे बढ़ना है इस बारे पता करता है। आत्मकथा पढ़कर पाठक के मन में सकारात्मक विचार व जीवन को गति देने का काम करते है। जीवन जब सामान्य रूप से चलता है तो उसमें कोई आशा-निराशा, दुःख-सुख आदि नजर नहीं आते पर वह पाने की बस कहता जाता है। जीवन में जब समस्याएं आती है तभी मनुष्य के विवेक व उसकी गति का

[62] पंकज चतुर्वेदी, आत्मकथा की संस्कृति, पृ0 23

पता चलता है। इस समस्याओं को पार करके आगे बढ़ना ही जीवन है। जब मनुष्य के जीवन में कोई समस्या नहीं होती है तो समझ लेना चाहिए उसके जीवन में कुछ नया घटित नहीं हो रहा है। इन समस्याओं को पार पाने के रास्ते वास्तव में जीवन जीने के रास्ते होते हैं। इन समस्याओं से पार पाने के लिए किए गए संघर्ष व कार्य ही जीवन के वास्तविक कार्य होते है। मनुष्य आगे बढ़ने के लिए जो फैसले लेता है वही उसको महान बनाते हैं। मनुष्य की पहचान उसके फैसलों से होती है। इस सभी का वर्णन ही आत्मकथा का रूप लेता है। यह दूसरों के लिए प्रेरणा बनती है और भविष्य में लोगों को रास्ता दिखाने का काम करती है। इसी कारण आत्मकथाओं की उपादेयता बढ़ती है और भविष्य में प्रासंगिक होती है।

आत्मकथा पढ़ने से पाठक के जीवन में समस्या समाधान के नए-नए तरीके विकसित होते है। सकारात्मक सोच को गति मिलती है। इसी कारण आज अनूदित आत्मकथाओं का महत्त्व भी दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अनूदित आत्मकथाओं के द्वारा उनकी पहुंच अन्य भाषाओं के पाठकों तक भी पहुंचती है। अनुवाद का ही परिणाम है कि पंजाबी, मराठी, उर्दू, बांग्ला, तमिल, तेलगू, मलयालम, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं की आत्मकथाएं हमारे सामने हिन्दी भाषा में उपलब्ध है। बेबी हालदार की 'आलो-आंधरि', 'कमला दास की 'मेरी कहानी', बेबी काबले की 'जीवन हमारा', दोस्तोवस्की की 'नोट्स फ्राय अंडरग्राउन्ड', 'तसलीमा नसरीन की 'द्विखंडित', 'ज्यां पाल सात्र की शब्द, पंडित जवाहर लाल नेहरू की भारत एक

खोज आदि आत्मकथाएं अनूदित होकर विभिन्न भाषा-भाषी वर्ग के पाठकों की पहुंच में आ रही है।

जब हम अन्य भाषाओं की अनूदित आत्मकथाओं को पढ़ते हैं तो हम उन लेखकों के बारे में तो जानकारी प्राप्त करते ही है, साथ-साथ हम उस परिवेश की राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि स्थितियों से भी अवगत होते है। आत्मकथा में केवल आत्मकथाकार का व्यक्तिगत जीवन ही नहीं होता अपितु वह जिस समाज में रहता है उसमें घटित होने वाली उन सभी घटनाओं का वर्णन मिलता है जिनका प्रभाव आत्मकथाकार के जीवन पर पड़ा है। इनको पढ़कर पाठक की साहित्यिक जानकारी भी बढ़ती है और उसकी सोच का दायरा बढ़ता है। अनेक प्रकार के लेागों के जीवन में आए संघर्षों और उनके अनुभवों का सीधा संबंध पाठक से हो जाता है। आत्मकथाओं की प्रासंगिकता व उपादेयता इसलिए अधिक है क्योंकि ये रचनाकार का सत्य लिखती है कोई बनावटी बात नहीं करती। किसी गगन को छूने की बात नहीं करती आत्मकथा अपितु यथार्थ के शिलालेख को पाठकों के सामने प्रस्तुत करती है। इसी संदर्भ ने मन्नू भण्डारी ने बहुत ही स्पष्ट बात कही है कि - ‘‘आज तक मैं दूसरों की जिन्दगी पर आधारित कहानियां ही रचती आई थी, पर इस बार मैंने अपनी कहानी लिखने की जुर्रत की है। दूसरों को कहानियां रचते समय मुझे अपनी कल्पना की उड़ान के लिए पूरी छूट रहती थी, जिसके चलते मैं उनकी जिन्दगी की किसी घटना या अनुभव को उकेरती । वह सब तो मेरे लिए निमित मात्र रहता था। जिसे माध्यम बनाकर मैं हमेशा

उसके अनुभव को सीमित दायरे से निकालकर किसी व्यापक संदर्भ के साथ हमेशा उसके अनुभव के साथ अनेक दूसरे भी तादात्म्य स्थापित कर सकें यानि कि वह सबका अनुभव बन सके। किन्तु अपनी कहानी लिखते समय सबसे पहले तो मुझे अपनी कल्पना के पर ही कतर कर एक ओर सरका देने पड़े, क्योंकि यहां तो निमित्त भी मैं ही और लक्ष्य भी मैं ही। यहां न किसी के साथ तादात्म्य स्थापित करने की अपेक्षा न सम्भावना। यह शुद्ध मेरी ही कहानी है और इसे मेरा ही होना था, इसलिए न कुछ बदलने या बढ़ाने की आवश्यकता थी, न काटने-छांटने की। यहां मुझे केवल उन्हीं स्थितियों का ब्यौरा प्रस्तुत करना था, वो भी जस-का-तस, जिनसे में गुजरी .... दूसरे शब्दों में कहूँ तो जो कुछ मैंने देखा जाना, अनुभव किया, शब्दशः उसी का लेखा जोखा है यह कहानी[63]।'' इस प्रकार जो रचना यथार्थ की भूमि पर जन्म लेती है उसका प्रासंगिक होना कोई बड़ी बात नहीं होती। इस प्रकार देखा जाए तो आत्मकथा विधा बहुत ही सशक्त और समृद्ध है। आत्मकथा का अतीत इतना समृद्ध नहीं रहा।

1.4 **महिला लेखिकाओं की आत्मकथा का उद्भव एवं विकास** –

हिंदी साहित्य की पहली आत्मकथा 'अर्द्धकथानक' नाम से प्रकाशित है। इसके लेखक श्री बनारसीदास जैन हैं | यह आत्मकथा सन् 1641 ई. में लिखी गई थी। यह एक पद्यात्मक आत्मकथा है जिसमें कुल 675 पद सकंलित हैं। इस आत्मकथा

[63] मन्नू भण्डारी, एक कहानी यह भी, पृ0 7-8

का सर्वप्रथम संपादन श्री नाथूराम प्रेमी ने किया तथा प्रकाशन पहली बार जुलाई 1943 ई. में 'हिंदी-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बंबई' से हुआ। हिंदी की पहली गद्य आत्मकथा भारतेन्दु बाबू हरिशचन्द द्वारा 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' शीर्षक से 1876 ई. में लिखी गई। इस आत्मकथा का प्रथम बार प्रकाशन 'कविवचन-सुधा' नामक मासिक पत्रिका में भाग-8 सन् 22 वैशाख कृष्ण 4,1932 सवंत् में हुआ। यह मात्र दो पृष्ठों में लिखी गई एक अपूर्ण आत्मकथा है। आधुनिक हिंदी गद्य का सर्वप्रथम उदय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से हुआ है। खड़ी बोली हिंदी-गद्य के उत्थान करने से लेकर गद्य के स्वरूप निर्धारण करने, हिंदी-गद्य को नवीन मार्ग पर ले जाने तक का महत्त्वपूर्ण कार्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं भारतेन्दुयुगीन रचनाकारों ने किया है| भारतेन्दु मण्डल के कवियों में बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रताप नारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह, पं. अम्बिकादत्त व्यास, राधाकृष्णदास, नवनीत चतुवेर्दी, गोविन्द गिल्लाभाई, राधाचरण गोस्वामी, दुर्गादत्त व्यास इत्यादि का नाम उल्लेखनीय है। भारतेन्दु युग की सबसे बड़ी उपलब्धि खड़ी बोली हिंदी-गद्य रही है, इसलिए इस युग को गद्यकाल के नाम से भी जाना गया। भारतेन्दु हरिशचन्द ने न केवल खड़ी बोली हिंदी-गद्य को विकसित किया अपितु गद्य-साहित्य के क्षेत्र में नयी-नयी रचनाएँ जैसे रिपोर्ताज, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा पर लेखन कार्य के साथ-साथ नाटक, उपन्यास, कविता, निबन्ध इत्यादि भी

लगातार लिखते रहे हैं। उनके लेखन में राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति, मातृभूमि से प्रेम, जन-कल्याण, समाज सुधार, पुनर्जागरण का स्वर उच्चस्वर में मुखरित हुआ है।

भारतेन्दु ने 'हिंदी समारोह' के मंच से हिंदी भाषा पर भाषण देते हुए कहा था- 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति के मूल'। उक्त पंक्ति से ही उनका भाषा प्रेम स्पष्ट झलकता हुआ दिखाई देता है हिंदी-गद्य के विकास में 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र-मैंगजीन', 'बाला-बोधिनी', 'हरिश्चन्द्रचंद्रिका' इत्यादि पत्रिकाओं के प्रकाशन ने हिंदी गद्य को एक सशक्त एवं समृद्ध दिशा प्रदान की है। खड़ी बोली हिंदी-गद्य के अभ्युदय में भारतेन्दु जी का योगदान अतुलनीय एवं अविस्मरणीय रहेगा। हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन की परम्परा का सूत्रपात इस काल की ही देन है। हिंदी आत्मकथा-साहित्य का उदय भी इस काल से मानना समीचीन है। भारतेन्दु युग तक हिंदी गद्य का स्वरूप निर्धारित हो गया था, किन्तु अभी भी गद्य-साहित्य में सधुार की आवश्यकता थी। भारतेन्दु जी के हिंदी गद्य के परिमार्जन का कार्य आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने किया। सन् 1903 से 1920 तक वह जानी-मानी 'सरस्वती पत्रिका' से जुड़े रहे। द्विवेदी जी ने ही गद्य-पद्य दोनों भाषाओं की शैलियाँ एवं वर्तनी को आधुनिक बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। द्विवेदी युग के पश्चात् छायावाद युग का आरम्भ हुआ। छायावादोत्तर यह काल भारतवर्ष की संघर्षरत जनचेतना का अभिव्यक्तिकाल रहा है। इस काल ने भारतीय जन मानस को ही पलटकर रख दिया। जनसंघर्ष से राष्ट्रीय प्रेम की

भावना विकसित होने लगी। सामाजिक कार्यों में लोगों की भागीदारी दिनोंदिन बढ़ने लगी। इस युग में अनेक साहित्यकारों, स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी आत्मकथाएँ लिखी। इसी शृंखला में यदि उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की चर्चा न की जाए, तो बात अधूरी ही रहेगी। प्रेमचंद ने सितम्बर सन् 1931 में 'हंस' का एक विशेषांक 'आत्मकथांक' शीर्षक से प्रकाशित किया। इस विशेषांक में कुल 32 रचनाएँ छपी थीं। प्रेमचंद ने उन्हें 'आत्मकथा' संज्ञा से अभिहित किया, जो आत्मकथा-साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। राजेन्द्र यादव जब हंस के सम्पादक बने तो, उन्होने इसका पुनः प्रकाशन 'हंस आत्मकथांक विशेषांक' से वर्ष 2008 ई. में दिल्ली से करवाया। इस विशेषांक में कुल 52 आत्मकथाएँ संकलित है। इस विशेषांक की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि 20 आत्मकथाएँ लेखिकाओं द्वारा संकलित है। राजेन्द्र यादव द्वारा रचित आत्मकथा 'देहरि भई विदेस' (2005 ई.) समूचे हिंदी आत्मकथा-साहित्य की एक अमूल्य निधि है। अम्बिकादत्त व्यास (निजवृतान्त, 1901 ई.), स्वामी भदानंद (कल्याण मार्ग का पथिक, 1924 ई.), महावीर प्रसाद द्विवेदी (मेरी जीवन रेखा, 1933 ई.), भवानीदयाल संन्यासी (प्रवासी की कहानी, 1939 ई.), डॉ. श्यामसुंदर दास (मेरी आत्म कहानी, 1941 ई.), राहुल सांकृत्यायन (मेरी जीवन यात्रा, 1946 ई.), बाबू गुलाबराय (मेरी असफलताएँ, 1946 ई.), डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (आत्मकथा, 1947 ई.), सत्यदेव परिव्राजक (स्वतंत्रता की खोज में 1951 ई.), देवेन्द्र सत्यार्थी (चाँद सूरज के बीरन, 1952 ई.), डॉ. हरिवंशराय

बच्चन की आत्मकथा चार (4) खण्डों में प्रकाशित एक स्मृति-यात्रा-यज्ञ है। बच्चन की 'क्या भूलूं क्या याद करूँ', 1969 ई., नीड़ का निर्माण फिर, 1970 ई., बसेरे से दूर, 1977 ई., दस द्वार से सोपान तक, 1985 ई., इत्यादि सर्वश्रेष्ठ पुरुष आत्मकथाएँ हैं।

1.5 **बहुचर्चित महिला आत्मकथा: विहंगम दृष्टि**

"महिला आत्मकथा-साहित्य का सर्वप्रथम सूत्रपात भी बांग्ला भाषा में 'आमार जीबोन' नामक आत्मकथा से सन् 1876 ई. में हुआ। इसकी लेखिका रससुंदरी देवी है। इस लिखित आत्मकथा में उन्होने स्त्री जीवन की अत्यन्त निजत्त्व और गोपनीय जिन्दगी की दास्तां को न केवल सार्वजनिक किया अपितु अपनी प्रतिरोधी चेतना द्वारा समय-समय पर ज़ाहिर भी करती रही हैं। यह आत्मकथा स्त्री असमानता और अन्याय का कच्चा चिट्ठा खोलती है। यही साहस बांग्ला, मराठी इत्यादि अनेक भाषाओं के साथ-साथ हिंदी भाषा की अनेकों आत्मकथाओं में भी प्रतिबिम्बित हो रहा है। महिला आत्मकथाओ की दृष्टि से बांग्ला में रससुंदरी देवी की आत्मकथा के पश्चात् बिनोदिनी दासी (आमार कोथा, 1912 ई), देवी शरद सुंदरी (आत्मकोथा, 1913 ई.), निस्तारिणी देवी (सेकाले कोथा, 1913 ई.), प्रसन्नमयी देवी (पूर्वकोथा, 1917 ई.), अमिय बाला (अमियबाला की डायरी, 1929 ई.), सदु क्षिणा सेन (जीवन स्मृति-, 1932 ई.) इत्यादि उल्लेखनीय है। आत्मकथाओं का लेखन प्रमाणित करता है स्त्री पुंसवादी समाज को चुनौती देते हुए पुरुष के सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन के अन्तर्विरोध को उजागर कर रही थी। बांग्ला भाषा के बाद मराठी भाषा में भी महिलाओं द्वारा अनेक आत्मकथाएँ लिखी गई जिनमें रमाबाई रानके (आमच्या आयुष्यांतीत कांही आठवणी-1910 ई.), अन्नपूर्णा बाई रानके (स्मृति तरंग-1931 ई.), लक्ष्मीबाई

तिलक (स्मृति चित्रे-1934 ई.), मीनाक्षी साने (जीवन नृत्य-1934 ई.), पार्वतीबाई आठवले (माझी कहानी-1936 ई.) इत्यादि प्रमुख है इन सभी आत्मकथाओं में पुरुष प्रधान समाज से मुक्ति की छटपटाहट एवं असमानता की वेदना के स्वर उच्च स्वर में मुखरित हुए हैं[64]।"

हिंदी भाषा में प्रथम लिखित ज्ञात महिला आत्मकथा 'दुःखिनीबाला' द्वारा रचित 'सरला' एक विधवा की आत्मजीवनी' है। यह आत्मकथा एक विधवा महिला की आत्मबयानी, पीड़ा, अन्याय को भोगते हुए अपराजेय की दर्दभरी दास्तान भी है, जिसमें पुरुष प्रधान समाज के प्रति विद्रोह भाव के साथ-साथ प्रतिरोध का तीखा स्वर भी शामिल है। 'स्त्री-दर्पण' पत्रिका में जुलाई सन् 1915 से मार्च, 1916 तक के अंकों में 'आत्मजीवनी का धारावाहिक रूप' से प्रकाशन भी हुआ था[65]।

इस आत्मकथा के बाद हिन्दी भाषा में स्त्री आत्मकथा-साहित्य पर लेखन कार्य लगभग न के बराबर हुआ। "1932 में 'हंस' का एक विशेषांक 'आत्मकथांक' शीर्षक से प्रकाशित हुआ, जिसमें श्रीमती यशोदा देवी और शिवरानी देवी द्वारा लिखी गई आत्मकथाएँ प्रकाशित हुई थी।" "स्त्री हिन्दी आत्मकथा-साहित्य में लगभग चार दशक बाद जानकी देवी बजाज की आत्मकथा (मेरी जीवन यात्रा-1956 ई.) श्री रिषभदेव रांका (लिपिक) द्वारा बोलकर लिखाई गई थी।" बीसवीं सदी के अन्तिम

[64] सरला: एक विधवा की आत्मजीवनी, दृष्टव्य प्रज्ञा पाठक, पृ0 23-25

[65] सरला: एक विधवा की आत्मजीवनी, दृष्टव्य प्रज्ञा पाठक, पृ0 5

दशक तक आते-आते स्त्री हिन्दी आत्मकथा लेखन की रफ्तार तेज हुई है और एक के बाद एक स्त्री आत्मकथाएँ प्रकाशन में आ रही है। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में स्त्री आत्मकथाओं के साथ ही साथ दलित आत्मकथाएँ भी विशेष रूप से प्रकाशन में आई है। प्रतिभा अग्रवाल (दस्तक जिन्दगी की-1990 ई., मोड़ जिन्दगी का-1996 ई.), कुसुम अंसल (जो कहा नहीं गया-1996 ई.), कृष्णा अग्निहोत्री (लगता नहीं है दिल मेरा-1997 ई.), कौसल्या बैसंती (दोहरा अभिशाप-1999 ई.), पद्मा सचदेव (बूँद बावड़ी-1999 ई.), शीला झुनझुनवाला (कुछ कही कुछ अनकही-2000 ई.) इत्यादि महत्त्वपूर्ण स्त्री आत्मकथाएँ हैं।

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य दृष्टि से देखा जाए तो आत्मकथा बहुत ही जटिल, गौण, परन्तु एक अर्थपूर्ण विधा है| इसके माध्यम से मनुष्य अपना आत्मीय चरित्र सार्वजनिक करता है। 1796 ई. में पहली बार 'आत्मकथा' नामक शब्द का प्रयोग जर्मनी के रहने वाले 'हर्डर' नामक व्यक्ति ने किया। आरम्भिक समय में आत्मकथा और जीवनी को पर्यायवाची माना जाता था। इसलिए इसे 'आत्मजीवनी' कहा जाता है। 19वीं शब्तादी के आरम्भिक दशकों से ही आत्मकथा को जीवनी से अलग करके स्वतंत्र विधा के रूप में जाना जाने लगा। जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति आत्मकथा होती है। आत्मकथा एक ऐसा दस्तावेज है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने जीवन की घटनाओं और अनुभवों को आत्मविश्लेषण करके लिपिबद्ध करता

है। आत्मकथा लिखने का उद्देश्य अतीत में स्वयं के साथ घटने वाली घटनाओं की स्मृतियों का विवरण सत्य व यथार्थ की दृष्टि से आत्मनिरीक्षण होता है। साहित्य व आत्मकथा के अन्तःसम्बन्धों को भी हमें इसकी पारिभाषिक विवेचना से पहले जानना आवश्यक है। जीवन ही साहित्य का आधार है। दोनों एक-दूसरे के पूरक होते है। साहित्य वह संबंध सार्वजनिक जीवन, राजनैतिक जीवन, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन से भी होता है। जिस प्रकार साहित्य का सम्बन्ध व्यक्तिगत जीवन से होता है उसी प्रकार व्यक्तिगत जीवन में भी साहित्य के तत्त्व विधमान होते हैं। इसके परिणाम स्वरूप आत्मकथा ने साहित्य में अपना स्थान लोकप्रिय विधाओं में दर्ज करवा लिया है। वर्तमान समय में आत्मकथा गद्य साहित्य की एक तेजी से लोकप्रिय होती विधा है। इसके पीछे कारण यह है कि मनुष्य आज स्वयं के जीवन में झांकने की बजाए दूसरे के जीवन में ताक-झांक ज्यादा रखता है। आत्मकथा के माध्यम से आत्मकथाकार अपने जीवन के सफर में घटने वाली घटनाओं के आधार पर अपने निजी पहलूओं का वर्णन करता है। आत्मकथा में सबसे ज्यादा ध्यान सत्य पर होता है अर्थात् आत्मकथा का आधार सत्य है। आत्मकथा की विधा सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त सभी भाषाओं में मिलती है। अर्थात् जो व्यक्ति दुनिया के किसी भी कोने में रहता हो अगर वह आत्मकथा लिखना चाहता है तो वह अपनी मातृभाषा या अपने क्षेत्र की मानक भाषा में लिखेगा चाहे वह कोई भी भाषा हो। आत्मकथा में लेखक अपने प्रति तटस्थ भाव से अपने विचारों की

अभिव्यक्ति करता है। इसका केन्द्र स्वयं आत्मकथाकार होता है। वह अपने अनछुए पहलुओं को पाठक के रखने का सामर्थ्य करता है। आत्मकथा कोई मनोरंजन परक साहित्य नहीं है, अस्तु यह पाठक में व्यक्ति को समझने व परिस्थितियों से निपटने की एक समझ व कला को भी विकसित करती है। देखा जाए तो आत्मकथा विधा का आरंभ ही दूसरे के विषय में जानने व स्वयं के विषय में कहने के लिए ही हुआ है । आत्मचरित्र में लेखक अपनी भावनाओं को प्रस्तुत करता है। इससे पाठक को ऐसा लगता है जैसे बिना मिले ही उसने लेखक से मुलाकाल कर ली हो। अर्थात् पाठक भावनाओं के माध्यम से लेखक से जुड़ जाता है। आत्मकथा के द्वारा मनुष्य अपनी अस्मिता की स्थापना करना चाहता है। इससे उसे समाज में एक उचित स्थान भी मिलता है। मनुष्य अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति भी आत्मकथा के द्वारा व्यक्त करता है। आत्मकथा के माध्यम से लेखक अपनी समस्याओं को प्रस्तुत कर उनको याद करने के उपाय जो स्वयं ने अपनाए समाज के सामने प्रस्तुत करता है।